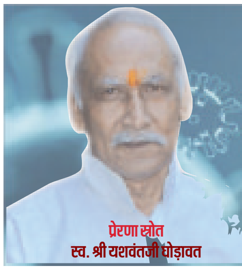

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Email-mahikigunj@gmail.com

वर्ष-02, अंक - 27 (साप्ताहिक) | खवासा, गुरुवार 09 अप्रेल 2020 | पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

कोरोना वायरस का टेस्ट फ्री हो, सरकार करें भुगतानः सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि निजी लैब को कोरोना जांच के लिए पैसे लेने की अनुमति नहीं होनी चाहिए। हम इस मसले पर आदेश पारित करेंगे। निजी लैब को कोरोना टेस्ट की फीस लेने से रोका जाना चाहिए और ऐसी प्रक्रिया बननी चाहिए कि सरकार उन्हें भुगतान करे।

सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि देश की 118 सरकारी लैबों में 15 हजार टेस्ट हो रहे थे जो ये पर्याप्त नहीं था। इसलिए निजी लैब में जांच के लिए नोटिफिकेशन जारी किया गया। तब जस्टिस अशोक भूषण ने कहा कि निजी लैब को कोरोना टेस्ट की फीस लेने से रोकिए। ऐसी प्रक्रिया बनाइए कि सरकार उन्हें भुगतान करे। तब तुषार मेहता ने कहा कि हम इस सुझाव पर गौर करेंगे। पिछले 3 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया था। वकील शशांक देव सुधी ने दायर याचिका में मुफ्त टेस्ट और इलाज की मांग की है। याचिका में कहा गया है कि निजी लैब जांच के लिए 4500 रुपए ले रहे हैं। याचिका में मांग की गई है कि टेस्ट को फ्री किया जाए इसकी कोई फीस न ली जाए। सरकार के 4500 रुपये तक टेस्ट का फीस लेने के फैसले को निरस्त किया जाए। याचिका में कहा गया है कि देश के हर जिले में कम से कम सौ या पचास वेंटिलेटर होने चाहिए।

28 सालों में दूसरी बार रामलला को मिला न्यूनतम चढ़ावा

नई दिल्ली, एजेंसी। रामजन्मभूमि में विराजमान रामलला को इस पखवाड़े न्यूनतम चढ़ावे की राशि प्राप्त हुई। बीते 28 सालों में ऐसा दूसरी बार हुआ है। इसके पहले वर्ष 2002 में शिलादान के दौरान यहां महीनों चले अघोषित कर्फ्यू के दौरान भी ऐसी ही स्थिति आई, जब अयोध्या में श्रद्धालुओं के आवागमन पर पूरी तरह से रोक लग गई। उस दौरान भी मंदिरों के व्यवस्थापकों को भारी घाटा उठाना पड़ा। इस बार भी कोरोना की वैश्विक महामारी के कारण देश भर में घोषित लॉकडाउन के चलते रामनवमी मेला ही नही हो सका। इस पखवाड़े रामजन्मभूमि में विराजमान रामलला को न्यूनतम चढ़ावा ही प्राप्त हुआ। वह भी यह चढ़ावा तब आ सका जबकि लाकडाउन के बाद भी रामजन्मभूमि में दर्शन पर कोई रोक नही लगाई गई। इसके विपरीत शेष मंदिरों को जिला प्रशासन के निर्देश पर आम श्रद्धालुओं के लिए पूरी तरह से बंद कर दिया गया। इसके चलते इन सभी मंदिरों में आमदनी शून्य हो गई। वही रामजन्मभूमि में चढ़ावा राशि की गिनती प्रत्येक माह की पांचवी और बीसवीं तारीख को की जाती है। इस कड़ी में चढ़ावा की गिनती रामजन्मभूमि ट्रस्ट के ट्रस्टी डा. अनिल मिश्र की मौजूदगी में भारतीय स्टेट बैंक की अयोध्या शाखा के कर्मचारियों ने मशीन के माध्यम से की लेकिन चढ़ावे की राशि इतनी कम थी कि मशीन की जरुरत ही नहीं रही। फिर भी कोरोना महामारी से सावधानी को लेकर कर्मचारियों ने मैनुवल गिनती से परहेथ किया। चढ़ावे की कुल राशि महज 13 हजार ही थी जबकि इसके पहले पखवारे में साढ़े 8 लाख का चढ़ावा रामलला को प्राप्त हुआ था।

शिवराज सरकार नें मध्य प्रदेश में लागू किया एस्मा

भोपाल, एजेंसी। कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए सरकार हर कोशिश कर रही है। बुधवार दोपहर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने चौकाने वाला फैसला लिया। पूरे प्रदेश में एस्मा लागू कर दिया है। सरकार ने प्रदेश में एसेंशियल सर्विसेज मैनेजमेंट एक्ट (अत्यावश्यक सेवा अनुरक्षण कानून) तत्काल प्रभाव से लागू किया है। मुख्यमंत्री ने ये निर्णय केंद्र सरकार द्वारा जारी किए गए निर्देश के बाद लिया है।

गृह मंत्रालय ने दिए थे निर्देश

बुधवार को गृह मंत्रालय ने कोरोना महामारी से निपटने के लिए देशभर में लॉकडाउन के बीच आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए एस्मा लागू करने को कहा था। केन्द्रीय गृह सचिव अजय कुमार भल्ला ने सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को लिखे गए पत्र में कहा है कि

आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव उपाय किए जाने चाहिए। इन उपायों के तहत स्टॉक सीमा तय करने, मूल्यों का निर्धारण, उत्पादन बढ़ाना और डीलरों, अन्य के खातों की जांच आदि शामिल है।

इसलिए लागू करना पड़ा कानून

भल्ला ने कहा कि श्रमिकों की कमी के चलते विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में कमी की रिपोर्ट आ रही हैं। ऐसी स्थिति में जमाखोरी, कालाबाजारी, मुनाफाखोरी की आशंका है, जिससे वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी होगी। राज्यों से कहा गया है कि वे उचित दर की दुकानों पर वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए तुरंत कदम उठाएं। इससे पहले मंत्रालय ने आपदा प्रबंधन अधिनियम के तहत जारी आदेश में खाद्य पदार्थों, दवाओं और चिकित्सा उपकरणों के विनिर्माण और उत्पादन की अनुमति दी थी। उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने भी राज्यों को इन वस्तुओं के ऑर्डर देने से संबंधित प्रावधानों में 30 जून तक रियायत दी है। आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत आपराधिक गतिविधियों में शामिल होने पर सात वर्ष तक की सजा का प्रावधान है।

सर्वे : जनता ने कहा, बढना चाहिए लॉकडाउन

कई लोगों ने कर्फ्यू को बेहतर समाधान माना

नई दिल्ली, एजेंसी। कोरोना वायरस महामारी के संक्रमण को रोकने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 दिनों के देशव्यापी लॉकडाउन का ऐलान किया था। आने वाले 14 अप्रैल को लॉकडाउन की यह अवधि समाप्त हो रही है। ऐसे में लॉकडाउन को आगे बढ़ाने को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं हैं। कुछ राज्यों के मुख्यमंत्रियों और सरकार में सूत्रों के हवाले से कहा जा रहा है कि लॉकडाउन आगे बढ़ सकता है। कई विशेषज्ञों ने भी इसे बढ़ाने का सुझाव दिया है। इस बीच एक सर्वे में जनता ने लॉकडाउन की अवधि को आगे बढ़ाने के पक्ष में दलीलें दीं। वहीं कुछ लोगों ने आंशिक लॉकडाउन पर समर्थन जताया। कुछ ऐसे भी लोग रहे जिन्होंने लॉकडाउन की सीमा बढ़ाए जाने के फैसले से सख्त असहमति जताई।

लोगों ने सुझाव दिया कि लॉकडाउन और 21 दिनों के लिए बढ़ा देना चाहिए लेकिन साथ ही ऑनलाइन ग्रॉसरी और दवाइयों की डिलिवरी की व्यवस्था भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी डॉक्टरों को ऑनलाइन वॉट्सऐप कंसल्टेशन के लिए भी उपलब्ध रहना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने विपक्षी नेताओं से कोविड-19 को लेकर की चर्चा

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में कोरोना वायरस से बढ़ते संक्रमण को लेकर बुधवार को विपक्षी दलों के लोकसभा और राज्यसभा में सदन के नेताओं से बातचीत की। प्रधानमंत्री ने इस बैठक में सरकार द्वारा कोरोना संकट से निपटने के कार्यों की जानकारी दी और नेताओं से राय मांगी। यह बैठक भी प्रधानमंत्री ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए की।

इस बैठक में कांग्रेस समेत लगभग सभी विपक्षी दलों के नेताओं ने भाग लिया। बताया जा रहा है कि बैठक में सभी सदन के नेताओं ने प्रधानमंत्री के सामने सामने 5 मांगें रखी है। इसमें राज्य एफआरबीएम राजकोषीय सीमा को 3 से 5 फीसदी करने, राज्यों को उनका बकाया देने, राहत पैकेज को जीडीपी के एक फीसदी से बढ़ाकर 5 फीसदी करने, कोरोना टेस्ट को फ्री करने और पीपीई समेत सभी मेडिकल इक्विपमेंट को मुहैया कराने की मांग की गई है। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी कोरोना से निपटने और लोगों को जागरूक करने के लिए देश के विभिन्न क्षेत्र को दिग्गजों के साथ बात कर चुके हैं। इसके तहत राज्यों के मुख्यमंत्रियों, खेल जगत के दिग्गजों डॉक्टरों और मीडिया आदि प्रमुख रूप से शामिल है।

पहले कहा जा रहा था कि प्रधानमंत्री मोदी की इस बैठक में तृणमूल कांग्रेस हिस्सा नहीं लेगी। लेकिन पार्टी के नेता सुदीप बंदोपाध्याय भी इसमें शामिल हुए। इसके अलावा डीएमके की ओर से टी.आर. बालू, एआईएडीएमके की ओर से नवनीत कृष्णनन, कांग्रेस की ओर से गुलाम नबी आजाद और अधीर रंजन चौधरी, टीआरएस की ओर से नम्मा नागेश्वर राव और के केशवा राव, सीपीआईएम की ओर से ई. करीम, शिवेसना की ओर से विनय राउत और संजय राउत, एनसीपी की ओर से शरद पवार शामिल थे। इसके अलावा अकाली दल की ओर से सुखबीर बादल, एलजेपी की ओर से चिराग पासवान, जेडी(यू) की ओर से आर.सी.पी. सिंह, सपा की ओर से राम गोपाल यादव, बसपा की ओर से दानिश अली और सतीश मिश्रा, वाईएसआर कांग्रेस की ओर से विजयसाई रेड्डी और मिथुन रेड्डी, बीजद की ओर से पिनाकी मिश्रा और प्रसन्ना आचार्य ने प्रधानमंत्री की बैठक में अपना-अपना पक्ष रखा।

सुविचार

सत्य को हजार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।

स्वामी विवेकानंद

खंडवा में एक कोरोना पॉजिटिव, कोविड केअर सेंटर में किया शिफ्ट

माही की गूंज, खण्डवा।

कलेक्टर तन्वी सुन्द्रियाल ने बताया कि बुधवार को प्राप्त जांच रिपोर्ट के अनुसार खण्डवा जिले के एक व्यक्ति की जांच रिपोर्ट कोराना पॉजिटिव प्राप्त हुई है। उन्होंने बताया कि खण्डवा के इस व्यक्ति के परिवार के सदस्यों द्वारा मार्च माह में विदेश यात्रा की गई थी, इस कारण से यह व्यक्ति पहले से ही होम क्वारेंटाइन था। होम क्वारेंटाइन के दौरान इस व्यक्ति में बुखार के लक्षण पाए जाने से इसके सेम्पल मेडिकल कॉलेज की वायरोलॉजी लेब में जांच के लिए भेजे गए थे, जिसकी रिपोर्ट आज पॉजिटिव प्राप्त हुई है।

कलेक्टर सुन्द्रियाल ने बताया कि इस कोरोना पॉजिटिव मरीज को जिला चिकित्सालय के कोविड केअर सेंटर में शिफ्ट किया जा रहा है। साथ ही परिवारजनों को भी क्वारेंटाइन किया जा रहा है। इस कोरोना पॉजिटिव मरीज के घर के आसपास के क्षेत्र का सर्वे चिकित्सा विभाग के दल द्वारा कल से किया जायेगा। साथ ही इस मरीज व उसके परिवारजनों के गत दिनों सम्पर्क में आने वाले लोगों के बारे में भी जानकारी एकत्रित की जायेगी।

देश को संकट में डालने वाले का नहीं होता कोई धर्म

धार्मिक कट्टरता नहीं, मानवता की आवश्यकता

माही की गूंज, झाबुआ। संजय भटेवरा

इन दिनों पूरे विश्व में कोरोना वायरस का संकट व्याप्त है। पूरा विज्ञान इस प्राकृतिक आपदा के आगे अपने आप को असहाय महसूस कर रहा है। मनुष्य की उड़ान को प्रकृति ने एक झटके में जमीन पर ला दिया है। बचाव ही उपाय, के तर्ज पर अधिकांश देशों ने अपने देश की जनता को अपने-अपने घरों में कैद कर लिया है। जिसके लिए लॉकडाउन शब्द इस्तेमाल किया गया है। लेकिन यह वास्तव में कैद है खुद को सुरक्षित रखने के लिए, अदृश्य शत्रु का मुकाबला करने के लिए और संक्रमण की इस कड़ी को तोड़ने के लिए है। पूरा देश प्रधानमंत्री के इस फैसले के साथ है और पूरे देश के नागरिकों ने अपने आप को अपने घरों में कैद कर लिया है। लेकिन कुछ विघ्नसंतोषी और स्वार्थी तत्वों को यह रास नहीं आया। एक और जहां पूरा देश प्रधानमंत्री की जनता कर्फ्यू की अपील का पालन कर रहा था, वहीं दूसरी ओर मानवता के दुश्मन धर्मान्धिता का स्वांग रचकर देश को एक बड़े खतरे की ओर ले जाने की नाकाम कोशिश कर रहे थे। वहीं कुछ असामाजिक तत्व इसे सामाजिक मुद्दा बनाकर सोशल मीडिया पर विभिन्न तरीके की प्रतिक्रिया व्यक्त करके इसको सही ठहराने का प्रयास कर रहे थे। वहीं कुछ असामाजिक तत्व इसे धार्मिकता का चोला पहनाकर देश की एकता और अखंडता की कीमत पर अपनी राजनीतिक रोटियां सेकने का प्रयास कर रहे थे।

धर्म से बड़ा देश होता है। हमारी राष्ट्रीयता ही हमारा सबसे बड़ा धर्म है। कोई भी धर्म देश की विघटनकारी ताकतों का समर्थन नहीं करता है। तब्लीगी जमात में शामिल मौलाना मोहम्मद साद को अपने आप को मौलाना कहलाने का हक भी नहीं है। एक ओर जहां देश के बड़े-बड़े धार्मिक स्थल बंद थे। वहीं वे मस्जिद में हजारों की तादाद में भीड़ इकट्ठा कर एक तरह से राष्ट्रद्रोह ही कर रहे थे। हिन्दुस्तान की सनातनी संस्कृति में कोई भी धर्म इस प्रकार कि इजाजत नहीं देता है। इसीलिए कहा गया है कि देश को संकट में डालने वाले का कोई धर्म नहीं होता है और हमें तो यही सिखाया भी गया है कि, मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना लेकिन तब्लीगी जमात का यह कृत्य तो आपस में बैर ही नहीं वरन् आपस में सामूहिक

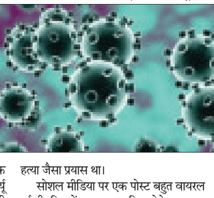

हत्या जैसा प्रयास था।

सोशल मीडिया पर एक पोस्ट बहुत वायरल हुई थी। जिसमें कहा गया था कि, कोरोना वायरस पूरे विश्व में वायरस था और भारत आकर वह वर्ग विशेष का चोला पहन गया। निःसंदेह इस प्रकार की भ्रामक और गुमराह पोस्ट करने वाले मानव, समाज के दुश्मन हैं। हमारे सभी शास्त्रों में भी कहा गया है विपत्ति के समय राजा के हर फैसले का स्वागत करना चाहिए और व्यक्तिगत स्वार्थ को परे रखकर देश हित के बारे में सोचना चाहिए। लेकिन हिंदुस्तान की गंगा जमुनी तहजीब में कुछ असामाजिक तत्व को संकट के समय भी व्यक्तिगत स्वार्थ ही नजर आता है।

वर्तमान महामारी में हमें धैर्य और संयम की आवश्यकता है। संकट के इस समय में हमारे देश के डॉक्टर और पुलिसकर्मी देवदूत बनकर अपनी जान पर खेल कर लोगों की जान बचाने में जुटे हुए है। लेकिन देश में कुछ घटनाओं में इन्हीं देवदूतों पर हमला किया गया है और हमला करने वाले की मानसिकता क्या होगी? यह ऐसी घटना से स्पष्ट प्रतीत होता है। चाहे इंदौर की टाटपट्टी बाखल की घटना हो या उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद की घटना, संकट के दौर में जब वे स्वयं अपनी जान पर खेलकर आपकी जान बचाने का प्रयास कर रहे हैं और उन पर हमला, उनके साथ अश्लीलता यह कोई मानवता का कृत्य नहीं, दानवता का कृत्य है और ऐसे लोग भले ही धार्मिकता का चोला ओढ़े हुए हो वे धर्म के नाम पर कलंक है और इसके लिए उन्हें कड़ी से कड़ी सजा देना चाहिए। इस संदर्भ में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की टिप्पणी काफी सटीक है कि, मानव अधिकार आयोग मानवों के लिए है, दानवों के लिए नहीं।

इन सबके बीच देश में कुछ सकारात्मक बातें भी सामने आ रही है। प्रधानमंत्री की एक अपील पर पूरे देश ने न केवल एक साथ थाली और ताली बजाई वरन संकट की इस घड़ी में पूरे देश की एकता व मनोबल बढ़ाने की कामना के साथ दीये भी जलाए है। पूरे देश में भूखे को भोजन कराने के लिए विभिन्न वर्गों के लोग आगे आए हैं और वे निःस्वार्थ भाव से सेवा कार्य भी कर रहे हैं। गरीब, मजदूर और बेसहारा लोगों की मदद के लिए कई हाथ सामने आए हैं और इस संकट का मुकाबला मिलकर कर रहे हैं। इंदौर की एक सुकून देने वाली घटना भी सामने आई है, जहां रानीपुरा क्षेत्र में एक महिला की मौत होने पर दूसरे वर्ग के लोगों ने न केवल शव यात्रा को कंधा दिया, बल्कि अंतिम संस्कार की सारी रस्में पूरी करवाने में मदद की। इस प्रकार की घटनाओं से ही हमारी अनेकता में एकता की धारणा को मजबूती मिलती है और बड़ी से बड़ी आपदाओं का सामना भी हम इस प्रकार के हौंसले से कर सकते हैं। निःसंदेह यह समय विकट है, आने वाले कल की भयावह तस्वीर हमारे सामने हैं, कल क्या होने वाला है यह कोई नहीं बता सकता है। लेकिन इस अनिश्चय के इस दौर में एक शब्द हौंसला बढ़ाता है और वह है यह वक्त भी गुजर जाएगा।

चार नगरीय निकायों में प्रशासक नियुक्त

[illegible]

गेहूं खरीदी में रखेंगे सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान

[illegible]

मौत और मातम की दीवाली पहली बार देखी

[illegible]

भोपाल में बाहर से आए कुछ लोगों की वजह से बढ़े मामले

मुख्यमंत्री बोले-कोरोना संकट से निपटने के लिए सख्ती से करना होगा पाबंदियों पर अमल

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि कोरोना संकट से निपटने के लिए हम सबको पाबंदियों पर कड़ाई से अमल करना होगा। उन्होंने कहा कि समस्या को बढ़ने से रोकने के लिए हमें सभी जरूरी कदम उठाने होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि बाहर से आए कुछ लोगों की वजह से भोपाल में समस्याएं बढ़ी हैं। हमें हर हाल में भोपाल को हॉटस्पॉट बनने से रोकना होगा। लॉकडाउन के दौरान बिना अपरिहार्य कारण के बाहर निकलने पर सख्त कार्यवाई की जाएगी। समस्या बढ़ी है तथा इसे और अधिक व्यापक रूप लेने से रोकना होगा।

आप सभी के जज्बे और काम से जल्द हारेगा कोरोना वायरस

भोपाल

[illegible]

एनजीएम और आशा कार्यकर्ताओं से की बात

[illegible]

पूरा प्रदेश आपका आभारी

[illegible]

हर विभाग के कार्यकर्ताओं को किया प्रणाम

[illegible]

प्रदेश के किसी भी जिले में नहीं पहुंचा सांसद निधि का पैसा

जिम्मेदारों की लापरवाही से ठंडे बस्ते में माननीयों की करोड़ों की घोषणा

भोपाल

[illegible]

किसने कितनी राशि की घोषणा

[illegible]

यह सांसद भी कर चुके राशि देने की घोषणा

[illegible]

कोरोना से निपटने कैदी दे रहे योगदान

मप्र की जेलों में बने तीन लाख मास्क

भोपाल

[illegible]

प्रदेश की 40 जेलों में चल रहा काम

[illegible]

इंदौर में राशन नहीं मिलने से लोग परेशान

अधिकांश घरों में नहीं पहुंचा राशन, 3-4 दिन और लगेंगे

[illegible]

[illegible]

भाजपा ने प्रदेश कार्यालय में मनाया 40 वां स्थापना दिवस

[illegible]

छात्रों की परेशानी दूर करने मानव संसाधन विकास ने बनाई वेबसाइट

हॉस्टल में फंसे छात्र भोजन नहीं मिलने की ऑनलाइन कर सकेंगे शिकायत

[illegible]

मदद के लिए 6500 कॉलेजों ने बढ़ाया हाथ

[illegible]

कोरोना के बाद भी बीते साल की तुलना में 1338 करोड़ से अधिक का मिला राजस्व

भोपाल

[illegible]

[illegible]

लाइसेंस फीस में मिलेगी छूट

[illegible]

कोरोना से बचाव के लिए लोगों को जागरूक करने राज्यपाल की अनूठी पहल

गवर्नर ने तैयार की 39 लाख किसानों की ब्रिगेड

कोरोना से बचाव के लिए लोगों को जागरूक करने के लिए मध्य प्रदेश में 39 लाख किसानों की ब्रिगेड तैयार हो चुकी है। राज्यपाल लालजी टंडन की पहल पर यह अनूठा कारवां बना है। इसमें राज्य के 52 जिलों के 39 लाख किसान अब परिवार और गांवों में कोरोना से बचाव को लेकर लोगों को जागरूक करने के काम में लग गए हैं।

भोपाल

[illegible]

[illegible]

किसान भाइयोंकी पहल का उत्साहजनक नतीजा आ रहा सामने

[illegible]

किसानों के लिए एडवायजरी

[illegible]

क्षेत्र की 8 सहकारी संस्था की दुकान पर 6 सेल्समैन कर रहे खाद्यान वितरित, यहां भी सोशल डिस्टेंसिंग का अभाव

माही के गूंज, खवासा/भामल।

कोरोना वायरस की रोकथाम हेतु जिले में पूर्णतः लॉकडाउन के आदेश के बाद दूध, सब्जी, फ्ल-फ्रूट व किराना की अति आवश्यक सामग्री स्थानीय स्तर पर व्यापारी घर पहुंच सामग्री पहुंचाने की सुविधा दे सकता है। जिससे व्यक्ति खाद्यान व आवश्यक सामग्री हेतु लॉकडाउन का पालन हो सके और इस लाइलाज कोरोना वायरस से बच सके। लेकिन शायद यह आदेश सिर्फदूध, सब्जी, फ्ल-फ्रूट या किराना व्यापारियों के लिए ही जनहित की भावना जगा कर उक्त निर्देशों का पालन करवाने हेतु प्रतिबंधित किया है, यह भी देखा जा सकता है। लेकिन सरकार के अधीन अर्धशासकीय सहकारी संस्थाओं की दुकानों पर यह आदेश लागू नहीं है। नतीजन सरकार के द्वारा 3 माह का खाद्यान एक साथ सरकारी संस्थाओं से देने के आदेश दिए। जिसके बाद जिले में भी सोमवार से सहकारी संस्था से दुकान सुबह 10 से दोपहर 4 बजे तक खोल कर खाद्यान दे रही है। उक्त खाद्यान वितरण की व्यवस्था के साथ ही लॉकडाउन के निर्देशों का उल्लंघन तो हो ही रहा है। साथ ही सोशल डिस्टेंसिंग का पालन भी नहीं हो पा रहा है। शायद यह व्यवस्था जिले में कहीं संक्रमण का कारण नहीं बन जाए। सरकारी संस्था को भी चाहिए कि वह भी घर पहुंच खाद्यान वितरित करते तो शायद लॉकडाउन के आदेशों का पालन भी होता और ग्रामीण जनों में एक बड़ा संदेश यह जाता कि जब सरकारी संस्था शासन के निर्देशानुसार पालन कर घर पहुंच खाद्यान दे रही है तो वह भी लॉकडाउन का पालन कर बिना कारण से घर से बाहर नहीं निकलते। यह भी हो सकता था।

सहकारी संस्था की दुकान पर भीड़ होकर लॉकडाउन व सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जियां उडाई जा रही है।

खवासा आदिम जाति सहकारी संस्था के अंतर्गत 8 सहकारी संस्थाएं, तो भामल संस्था में 5 दुकानें हैं। परंतु दोनों संस्थाओं में खाद्यान वितरण करने हेतु 3-3 ही कुल 6 सेल्समैन ही है और एक-एक दिन अलग-अलग दुकान को खोलकर 3 माह का खाद्यान वितरित कर रहे हैं। यह खाद्यान भी अब अंतिम चरण सीमा पर वितरित होना है। मतलब कहा जा सकता है एक-एक, दो-दो दिन में खुली दुकानों पर बड़ी मात्रा में लॉक डाउन का उल्लंघन कर मजबूरी में भी खाद्यान लेने इन सरकारी संस्थाओं में ग्रामीण पहुंचे। जहां बड़ी भीड़ होकर सोशल डिस्टेंसिंग का ख्याल नहीं रखा गया। जिसका एक नजारा भामल की सरकारी संस्था की दुकान पर ही देखा जा सकता है। जहां खाद्यान लेने हेतु बिना सोशल डिस्टेंसिंग के भीड़ इकट्ठी होकर खाद्यान ले जाने को मजबूर हुए जो पूरी प्रशासनिक व्यवस्थाओं व आदेशों की धज्जियां उड़ाते हुए देखा जा सकता है। तो वहीं ग्रामीण इलाकों की अन्य दुकानों पर क्या स्थिति होगी, यह सहज ही समझा जा सकता है।

इस संबंध में संस्था के मैनेजर चंद्रप्रकाश त्रिपाठी से बात की कि शासन के निर्देशानुसार घर पहुंच खाद्यान संस्था की और से क्यों नहीं दिया जा रहा हमारे पास उनका स्टाफव नहीं परिवहन की कोई व्यवस्था है। जिसके कारण हम दुकान खोलकर ही 3 माह का खाद्यान वितरित करवा रहे हैं।

दुकानों पर सोशल डिस्टेंसिंग का पालन भी नहीं हो रहा है। हां, भामल में ऐसी स्थिति है। लेकिन आज दुकान खोलने पर पूरा पालन में जाकर करवा लूंगा। ग्रामीण अंचल की दुकानों पर भी यही स्थिति है। मैंने कल तलावड़ा में दुकान खुलवा कर मेरी ही उपस्थिति में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करवाया था। प्रतिदिन दुकान खोलकर सामग्री वितरण की जा रही है। नहीं क्षेत्र के दोनों संस्थाओं में 13 दुकान पर 6 ही सेल्समैन है। क्रमानुसार एक-एक दिन दुकान खोलकर खाद्यान वितरित कर रहे हैं। अभी तक कितना खाद्यान वितरित हो चुका है। करीब-करीब पूरा खाद्यान वितरित होने को है, कुछ लोग ही बाकी है। जिनको भी खाद्यान वितरित करना है।

विदेशी शराब दुकान से 35 हजार रुपए की शराब चोरी

माही की गूंज, थांदला। कोरोना संक्रमण की विभीषिका के चलते राज्य शासन के आदेश से 27 मार्च से समस्त शराब दुकानें बंद है। किंतु बदमाशों ने कोरोना को धत्ता बताते हुए शुक्रवार दरमियानी रात को पेटलावद रोड स्थित मालवा रीयल्टी प्राइवेट लिमिटेड के नाम से पंजीबद्ध टीन के सेट से बनी शराब दुकान के पिछले गेट को बदमाशों ने निशाना बनाते हुए 35000 रुपए की शराब पर हाथ साफकर दिया। आबकारी उप निरीक्षक श्रीमति किरण निनामा ने बताया कि बदमाश चद्दर के बोल्ड काट दुकान में प्रवेश कर शराब व विमल से भरा झोला लेकर फरार हो गए। लाक डाउन के चलते शासन के आदेशानुसार दुकान में सभी गेट पर लगे ताले सील किए गए थे, जो सलामत रहे। उक्त दुकान में लाखों रुपए की शराब भरी हुई थी। श्रीमति निनामा ने बताया कि दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे हाल ही में खराब पड़े थे। बदमाश जल्दबाजी में शराब ले जाने के एवज में एंड्राइड मोबाइल वहीं छोड़ गए हैं। जिससे पुख्ता सबूत जुटाकर आरोपी की धरपकड़ की जाएगी। घटना की जानकारी मिलते ही ठेकेदार पुलिस के साथ घटनास्थल पहुंचे। स्थानीय थाने में पदस्थ उप निरीक्षक आरडी बौरासी ने मौका मुआयना कर आरोपी द्वारा शराब दुकान में छोड़ा गया मोबाइल जप्त कर लिया गया है तथा पुलिस तफ्तीश में जुट गई है।

आरोपी शीघ्र गिरफ्तार होंगे

विदेशी शराब दुकान में चोरी के बाद आरोपी का मोबाइल घटना को ट्रेस करने में मददगार साबित होगा। वह आरोपी शीघ्र गिरफ्तार होंगे।

एमएस गवली, एसडीओपी, थांदला

जिला चिकित्सालय में कोरोना के 9 संदिग्ध मरीजों के सेम्पल भेजे गए

माही की गूंज, झाबुआ। जिला चिकित्सालय में मंगलवार को कोरोना संक्रमण को लेकर 9 नए संदिग्ध मामले झाबुआ जिला चिकित्सालय में सामने आये है। हालांकि सभी संदिग्ध मामले में सभी के सेम्पल जांच के लिये भेजे गये है। झाबुआ मुख्य चिकित्सालय एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ बी एस बारिया ने मामले की पुष्टि करते हुये बताया कि इन संदिग्ध में 3 चिकित्सक, 1 स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी शामिल, 2 पुलिस जवानो के सेम्पल भी जांच के लिये भेजे गये है। ये सभी लोग गुजरात से आने वाले लोगो की जांच ओर सुरक्षा में लगे थें सभी को होम आईसोलेशन में रखा गया है। श्री बारिया ने बताया कि जांच रिपोर्ट आने में दो दिन का समय लगेगा।

लॉकडाउन को लेकर शिवराज एक्शन में

प्रशासन भी हुआ सख्त, पंप पर नही मिलेगा पेट्रोल

माही की गूंज, झाबुआ।

कोरोना को रोकने के लिए लॉकडाउन का पूर्णतः पालन हो यह आवश्यक है। कोई भी व्यक्ति घर से निकले तो उस पर सख्त कार्यवाही की जाए। कोई कोरोना संक्रमण छुपाता है। जांच में सहयोग नहीं करता है, तो यह भी गंभीर अपराध होगा और ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध तत्काल एफआईआर दर्ज कर जेल भेजने के साथ ही जो भी कार्य में लापरवाही करेगा उसके विरुद्ध भी तत्काल एक्शन लिया जाएगा। उक्त बात प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इंदौर-भोपाल में बढ़ते जा रहे कोरोना संक्रमण के साथ प्रदेश के 12 जिलों से अधिक में मिले संक्रमित मरीज के बाद पूरी तरह से एक्शन में आए और संक्रमण की रोकथाम हेतु 6 अप्रैल को कलेक्टर व एसपी को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए कहीं। वैसे तो कलेक्टर प्रबल सिपाहा ने 1 से 10 अप्रैल तक कोरोना के संक्रमण की रोकथाम हेतु पूर्णतः लॉकडाउन का आदेश दे दिया था। जिले की पुलिस ने भी अपनी पूरी मेहनत के साथ कार्य कर चौकी व थाना मुख्यालय क्षेत्र में तो पूर्णतः लॉकडाउन करवाया, परंतु ग्रामीण अंचल से आने वाले रहवासियों जिनका सिर्फ बाजार में घूमने, देखने व गुटखा-पाउच लेने के नाम पर आ रहे थे और पूछने पर कभी मेडिकल पर दवाई लेने, ईलाज करवाने, पंप पर पेट्रोल भरवाने आदि बातों का बहाना बनाकर आवाजाही करते थे। लेकिन मुख्यमंत्री के आदेश के बाद मंगलवार से पुलिस व प्रशासन और ज्यादा हरकत में आ गया और बाजार में बिना कार्य से आने वाले व्यक्तियों को लॉकडाउन का सख्ती से पालन करवा कर कुछ इस तरह से रोकथाम के लिए कार्य कर रहे हैं।

झाबुआ सहित सभी तहसील मुख्यालयों पर प्रशासन ने पेट्रोल पंपों पर सख्ती करते हुए आम जन को पेट्रोल-डीजल नहीं देने के निर्देश दिए है। जिसके चलते पेट्रोल पंप से लोग खाली हाथ लौट रहे हैं। साथ ही जो लोग ड्यूटी, रोजमर्रा के आवश्यक कार्य हेतु आवागमन करते है, उन्हें ही प्रशासन के पास पर पेट्रोल दिया जा रहा है। इसी सख्ती को लेकर प्रशासन ने पेट्रोल पंप के आसपास कहीं कहीं पर पुलिस कर्मियों की भी ड्यूटी लगा रखी है। ताकि कोई लोग प्रशासनिक सख्ती का लाभ नहीं ले सके।

खवासा में युवाओ द्वारा संक्रमण की रोकथाम हेतु रोड़ पर वाहन खडे कर बिना काम से आने वाले व्यक्तियो को किया रवाना।

खवासा में मंगलवार को पुलिस ने दोनों पेट्रोल पंप मालिक को पेट्रोल नहीं देने के आदेश मौखिक रूप से दे दिए। जिसके बाद से किसी को भी पेट्रोल पंप से पेट्रोल नहीं दिया जा रहा है। पुलिस का मानना है कि, जब पेट्रोल ही नहीं मिलेगा तो बिना काम से कोई बाहर नहीं निकलेगा। वहीं बुधवार से ही स्थानीय कुछ युवाओं ने बाजार तक पहुचने वाले मुख्य मार्ग पर मोटरसाइकिल से तो पंगडन्डी मार्ग पर पत्थर रखकर अवरोधक बनाकर, बिना काम से आने वाले व्यक्तियों को समझाइश देकर घर भेज रहे हैं। फ्ल-फ्रूट, सब्जी, दूध व किराना की अति आवश्यक सामग्री को घर पहुंच सेवा चिन्हित व्यापारियों द्वारा दिया जा रहा है। किराना व्यापारी ने ग्रामीण अंचल से कोई व्यापारी भी सामान लेने बाजार में नहीं आए, इसके लिए चिन्हित व्यापारियों ने स्वैच्छिक रूप से प्रतिदिन निर्धारित समय तक गांव बाहर या उनकी दुकान तक सामान पहुंचाने की व्यवस्था कर रहे हैं, ताकि किसी को आवश्यक सामग्री हेतु परेशानी नहीं उठानी पड़े।

दो घंटे मिल रहा पेट्रोल

बामनिया में यहां पर सुबह 7से 10 बजे तक पंप से पेट्रोल दिया जा रहा है। पेट्रोल पंप मालिक अनुसार पुलिस ने मौखिक रूप से पेट्रोल पंप पर से सिर्फ2 घंटे पेट्रोल देने व बाद में पेट्रोल नहीं देने के आदेश दिए हैं, वैसे भी 10 बजे बाद कोई पेट्रोल भरवाने नहीं आता है।

तो वहीं सारंगी में मंगलवार से पेट्रोल पंप से पेट्रोल नहीं दिया जा रहा है। पुलिस के साथ फूड इंस्पेक्टर ने भी पेट्रोल नहीं देने के आदेश दिए हैं। सिर्फइमरजेंसी में ही किसी को पेट्रोल दिया जाएगा।

मेघनगर में मंगलवार से गांव वालों के कहने पर प्रशासन ने नगर के अंदर के पेट्रोल पंप बंद करवा दिए। गांव बाहर के पेट्रोल पंप पर पेट्रोल किसी को भी बिना इमरजेंसी के नहीं मिलेगा। चिन्हित प्रशासनिक अधिकारी की स्लिप, इमरजेंसी होने पर मिलेगी उन्हें ही पेट्रोल वह भी आवश्यकतानुसार दिया जाएगा।

पिटोल में भी सभी पेट्रोल पंप पर पेट्रोल देना बंद करवा दिया गया। इमरजेंसी सेवा में ही पेट्रोल दिया जाएगा। यहां के कुछ नगरवासियों ने लॉकडाउन के दौरान जिनकी भोजन की भी व्यवस्था नहीं हो रही है, ऐसे परिवार को चिन्हित कर नगर के रहवासियों द्वारा स्वैच्छिक रूप से जो-जो आटा, दाल, तेल, अनाज, मिल रहा है, उसे पैकेट बनाकर घर जा कर दे रहे हैं, तो वहीं कोई ग्रामीण अंचल से भी आ जाए जिसके पास भोजन की कोई व्यवस्था नहीं है, उसे भी पैकेट दिए जा रहे हैं। इन सेवादारों ने संकल्प लिया कि, यह सेवा की गतिविधि दिखावे के लिए ना हो, इसलिए किसी प्रकार से इस गतिविधि का फोटो नहीं खींचा जाएगा न ही सोशल मीडिया पर वायरल किया जाएगा।

पेटलावद नगर के बामनिया व थांदला मार्ग पर स्थित दोनो पम्प पर इमरजेंसी एवं जरूरी प्रशासनिक सेवा देने वाले का पास देखकर ही पेट्रोल दिया जा रहा है। बाकी किसी को भी पेट्रोल देने के लिए प्रतिबंधित कर दिया है। नगर के बाहर बदनावर मार्ग पर स्थित पम्प से पेट्रोल दिया जा रहा है। शायद पुलिस व प्रशासन वहां तक मना करने के लिए नहीं पहुंच पाया है।

थांदला में भी पेट्रोल को लेकर सख्ती पिछले 4-5 दिनों से देखने में आ रही है। जो लोग शहर से बाहर आवश्यक सेवाओं और सरकारी नौकरी, बैंकों आदि में लगे हैं, उन्हें ही प्रशासन के पास द्वारा पेट्रोल दिया जा रहा है। साथ ही नगर व आसपास के दुकानों पर पेट्रोल बेचने वालों पर सख्ती की गई है। पेट्रोल पंप संचालकों को स्पष्ट निर्देश है कि किसी भी व्यक्ति को बिना प्रशासन द्वारा जारी पास के पेट्रोल न दिया जाए। इसको लेकर आम नागरिक परेशान भी होते हुए दिखाई दे रहे हैं।

पेटलावद की दो बहनों का स्केटिंग डांस सोशल मीडिया पर मचा रहा धूम

माही की गूंज, पेटलावद। पेटलावद नगर के सर्राफा व्यवसायी सजंय सोनी की दोनों बेटियां एक इशिका सोनी व दूसरी शुभी सोनी। इन्होंने लॉक डाउन के दिनों में अपने घर की छत पर यह स्केटिंग डांस शूट किया। जिसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि पर अपलोड किया गया। बड़ी बहन इशिका सोनी आईआईएम रोहतक में पांच वर्षीय इंटरग्रेटेड एमबीए कोर्स रही है। साथ ही छोटी बहन शुभी सोनी श्री सत्य सांई विद्या विहार इंदौर में विज्ञान संकाय से 12वीं में अध्ययनरत है। आपको बता दें कि कोरोना महामारी के समय भारत सरकार ने 14 अप्रैल तक लॉक डाउन लगाया है। इन दिनों हर कोई अपनी अपनी हुनर-प्रतिभा को सोशल मीडिया पर शेयर कर रहा है। उन्हीं हुनर में से एक यह स्केटिंग डांस जो इन दोनों बहनों ने बखूबी बेहतरीन अंदाज में प्रस्तुति दी। जिसमें कोरोना से बचाव के तरीके इनके स्केटिंग डांस में प्रदर्शित हो रहे है। इनकी प्रस्तुति की सोशल मिडिया पर व नगरवासियों द्वारा सराहना भी की जा रही है।

करवड़ जैन परिवार का दूसरा वीडियो आया ,लोगो कर रहे हैं पसंद

विकास खण्ड के पेटलावद के श्री माल परिवार द्वारा कोरोना के बढ़ते प्रभाव को लेकर नाटक का मंचन कर शोसल मीडिया वाइरल किया था जिससे काफी प्रचिलित हुवा ओर सभी ओर नाटक की सराहना की गई उसी से प्रेरित हो कर श्रीमाल परिवार ने एक ओर नाटक का मंचन किया जिसमें दिखाया गया कि किस तरह यमलोक में समय से पूर्व मर कर यमलोक में आने वालों की संख्या बढ़ गई है जिसको यमराज चिंतित हैं और चित्रगुप्त धरती पर आये महासंकट कोरोना के बारे में बताते हैं और लोगो के द्वारा लॉक डाउन का पालन नही करने पर लोगो की अकाल म्रत्यु हो रही हैं । पूरे नाटक के मंचन में श्रीमाल परिवार के सदस्यों ने ही कार्य किया है । श्रीमाल परिवार के कोरोना के प्रति जागरूक करने के इस प्रयासों की काफी सराहना हो रही हैं।

राहत भरी खबर: तीन में से एक रिपोर्ट नेगेटिव, 2 रिपोर्ट आना बाकी

बामनिया-पिपलीपाड़ा के संदिग्ध युवकों के नहीं लिए गए सेम्पल

माही की गूंज ,पेटलावद।

कोरोना के कहर से पूरी दुनिया जूझ रहीं है। इससे बचाव के लिए तरह-तरह के उपाय किए जा रहे है। क्षेत्र से 16 लोगों को क्वारेंटाइन में रखा गया है। क्षेत्र के लिए एक राहत भरी खबर है कि अमरगढ़ का एक युवक रिपोर्ट आने के पहले ही अस्पताल से भाग गया था जो कि पुनः अस्पताल आया था। डॉ. चौपड़ा ने बताया कि यहां से तीन व्यक्तियों की रिपोर्ट जांच के लिए भेजी गई थी। जिसमें से अमरगढ़ के युवक की रिपोर्ट नेगेटिव आई है। उक्त युवक की रिपोर्ट नेगेटिव आने से प्रशासन ने राहत की सांस ली। क्षेत्र के लिए भी यह राहत भरी खबर है, लेकिन फिर भी लोगों को सोशल डिस्टेंसिंग व लॉक डाउन का पालन करना आवश्यक है। अभी तक पेटलावद क्षेत्र से कोई भी पोजेटिव मरीज नहीं मिला है तथा अमरगढ़ निवासी एक व्यक्ति की रिपोर्ट निगेटिव आई है। बीएमओ डॉ. चोपडा लगातार क्वारेंटीन में रखे हुए मरीजों से संपर्क कर उनसे उनके स्वास्थ्य की जानकारी ले रहे है। अभी तक कोई पोजेटीव मरीज नहीं निकला है। वहीं अब कोरोना संक्रमण की जांच रिपोर्ट इंदौर में बनने लगी है। जिससे जांच रिपोर्ट आने के काम में तेजी आई है।

8 क्वारेंटाइन सेंटर बनाए

वायरस को लेकर शासकीय अस्पताल ने पूरी तैयारियां कर रखी है। क्वारंटीन के लिए पेटलावद में विभिन्न स्थानों पर व्यवस्था की गई है। इस समय पेटलावद में 16 लोगों को क्वारंटीन में रखा गया है। बीएमओ डॉ. एमएल चौपडा ने बताया कि पेटलावद में 8 क्वारेंटाइन सेंटर बनाए गए है। जिसमें सिविल अस्पताल पेटलावद, कस्तूरबा गांधी बालिका छात्रावास, कन्या शिक्षा परिसर, कन्या आश्रम अंग्रेजी माध्यम, बालक छात्रावास सारंगी, बालक छात्रावास करवड, कन्या छात्रावास करवड, बालक छात्रावास दाडिया को बनाया गया। वहीं आइसोलेशन सेंटर के रूप में अर्हम इंस्टीट्यूट आफनर्सिंग पेटलावद और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पुराना भवन बनाया गया।

बार-बार भाग रहा था युवक

अमरगढ़ के युवक जो कि भीलवाड़ा राजस्थान से आया, कोरोना निगेटिव पाया गया। लेकिन युवक दो से तीन बार अस्पताल से भाग कर घर पहुंच रहा था। जिसे झाबुआ से आई टीम ने पुलिस की सख्ती से उठा कर अस्पताल भेजा। फिलहाल रिपोर्ट नेगिटिव आने से पूरे क्षेत्र के निवासियों ने राहत की सांस ली हैं। बीएमओ चौपड़ा ने बताया कि भीलवाड़ा से आए 28 लोगों की जांच की गई है। उसमें 16 को होम क्वारेंटाइन किया गया। वही बामनिया और पिपलीपाडा में मिले संदिग्धों के ब्लड सैम्पल नहीं लिए गए। बीएमओ का कहना है इनमें कोरोना के लक्षण नहीं थे। फिर भी इनको होम क्वारेंटाइन किया गया है और मेडिलक टीम की निगरानी में है। मोहनकोट क्षेत्र में इंदौर से आये दो युवकों को हॉस्पिटल में क्वारंटाइन किया गया है।

बरवेट की बहन निःशुल्क बांट रही मास्क टीम वर्क से 2 हजार मास्क बनाए

माही की गूंज , पेटलावद। कोरोना जैसी महामारी से बचने ले लिए भारत सरकार सहित शासन प्रशासन नाना प्रकार के जतन कर रहा है। इस बीमारी से बचने के लिए मास्क को बहुत ही महत्वपूर्ण वस्तु माना गया है। बाजारों में महंगे मास्क होने के कारण आमजन नहीं खरीद पा रहे है। वहीं बरवेट की रहने वाली बहन प्रेमलता पाटीदार निःशुल्क मास्क वितरण कर रही है। उनकी अपनी कपड़े की दुकान है। दुकान पर कपड़े सिलाई करती है। पीएम मोदी द्वारा 22 मार्च से देश में जनता कर्फ्यू लगने के बाद सारे शादी विवाह और पर्सनल काम पर प्रतिबंध लग गया है। कोरोना को लेकर प्रेमलता पाटीदार अपना सारा काम छोड़कर अपनी टीम की भगवती पाटीदार और निर्मला त्रिवेदी के साथ पार्वती पाटीदार भी मास्क बनाने के काम में लग गई। लॉकडाउन के कारण मास्क बनाने का सामना नहीं मिल रहा था, तो इन्होंने टीम में पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता जगदीश प्रजापत को भी जोड़ लिया। इन्होंने इलास्टिक और कपड़े की व्यवस्था कर दी। दिन रात करके हमने दो हजार से अधिक मास्क बना कर निःशुल्क वितरण कर दिए है। यह फैसला उन्होंने बाजारों में मास्क की किल्लत और मास्क की काला बाजारी को बढ़ते हुए लिया। प्रेमलता पाटीदार ने बताया कि इस बीमारी की रोकथाम के लिए सावधानी बरतना जरूरी है।

मोदी के आव्हान पर लिया फैसला

प्रेमलता पाटीदार ने बताया कि इस बीमारी को लेकर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की जनता को मन की बात में बोला था कि इस महामारी में आम आदमी भी जैसे भी हो जहां भी हो सहयोग करें। इसी बात को लेकर मेरे मन मे मास्क बनाने का विचार आया और सारा काम छोड़कर हमारी टीम मास्क बनाने में लग गई। प्रेमलता पाटीदार ने बताया कि मास्क के लिए कपड़ा और इलास्टिक जरूरी होता है। इलास्टिक बाजार मे मिल ही नहीं रहा था। इसके लिए मेरे भाई जगदीश प्रजापत ने कपड़ा और इलास्टिक उपलब्ध करवाया। जब तक कोरोना बीमारी खत्म नहीं होती तब तक हम मास्क बनाकर निःशुल्क वितरित करेंगे।

शासन के निर्देशों का पालन करते हुए मनाई भगवान महावीर की जयंती

जैन समाज के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म कल्याणक सादगी से मनाया

माही की गूंज, झाबुआ।

घर पर ही भगवान महावीर की आराधना की।

घर घर पर समाजजनो ने कि पूजन अर्चन।

नगर के दिगंबर जैन समाज ने शासन के निर्देशों का पालन करते हुए अपने-अपने घरों से ही भगवान की पूजन अर्चना की तथा सोशल डिस्टेसिंग को ध्यान में रखते हुए जीव दया के कार्य किए गए। सम्भवतः ये पहला अवसर होगा जब भगवान का जन्म के दौरान कोई बड़ा आयोजन नहीं हुआ। लोगों ने घरों से ही भक्ति नृत्य करके भगवान का जन्म कल्याणक मनाया। भगवान महावीर के पांचो महाव्रत अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य इस महामारी के समय में बहुत ही उपयोगी हैं। प्रातः काल मे नगर के दिगंबर जैन मंदिर में अभिषेक शांतिधारा के साथ सारी विधि विधान पूर्वक पूजा की गई। लॉक डाउन का पालन करते हुए 2-3 लोगों ने मंदिर जी में पहुंच कर सारी क्रिया विधि की। इनके अलावा बाकी सभी समाज जनों ने अपने घरों में ही जाप व पाठ किए व घंटानाद किए इसके चलते परिवार के लोगों ने थाली मंजीरे बजा कर भगवान के जयकार लगाते हुए भगवान का पृथ्वी पर स्वागत किया।

जीवदया कर जियो और जीने दो का संदेश दिया

सायं काल में भगवान की भव्य आरती की एवं जाप किए घरों को रंगोली व दियों से सजाया तथा सकारात्मकता का प्रचार किया। सकल दिगंबर जैन समाज ने भगवान महावीर के बताये मार्ग पर चलने की शपथ ली।

महिलाओ ने थाली बजाकर भगवान महावीर के जन्मकल्याण की दी शुभकामनाए।

गर्मी की दस्तक से ही 38 डिग्री पार हुआ तापमान

माही की गूंज, झाबुआ।

अप्रेल माह आरंभ होने के बाद अब गर्मी ने अपनी दस्तक देना तेजी से शुरू कर दी है। इस बार गर्मी का आभास देरी से हुआ है, प्रायः हर वर्ष गर्मी जनवरी के आधा पखवाड़ा बाद से लगना आरंभ हो जाती है, लेकिन इस बार मौसम परिवर्तन होने के चलते मार्च माह में भी बारिष और तेज हवाएं चलती रहीं, जिससे इस पूरी महीने ही मौसम पूरी तरह से सर्द और नम रहा। अब जब तेज गर्मी लगना शुरू हुई है, तो लोगों में यह प्रष्न है कि क्या तेज गर्मी से कोरोना वायरस का संक्रमण पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा, इसके वायरस खत्म हो जाएंगे, इस पर मौसम वैज्ञानिक अधिकारी के साथ चिकित्सक से बात की, तो उनके अनुसार इसका कोई ज्यादा असर नहीं पड़ना है।

एक तरफजहां शहर में लॉकडाउन के चलते सडकों और बाजारों में पूरी तरह से सन्नाटा है, तो देर आए, दुरस्त आए की तर्ज पर गर्मी ने देरी से ही अब अपने तेवर तेज कर दिए है। पिछले कुछ दिनों से तापमान में भी लगातार बढ़ोत्तरी हो रहीं है। जिसके चलते अब लोग अपने घरों पर पंखो का उपयोग अधिक कर रहे है। साथ ही अंगूर, मौसमी, संतरा, तरबूज, पपीता आदि की खरीदी कर इनका जमकर सेवन कर रहे है, चूंकि इनमें कई प्रकार के विटामिन होने से यह कोरोना वायरस से लड़ने के लिए हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता को काफी बढ़ाता है। 5 अप्रैल की सुबह से लेकर रात गर्मी महसूस हो रही है। मौसम विभाग के अनुसार 5 अप्रेल को अधिकतम 38.8 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम 18.4 डिग्री टेम्प्रेचर रेकार्ड किया गया। विभाग के अनुसार आगामी दिनों में भी अधिकतम तापमान 38-40 के बीच ही रहेगा।

घरों पर दे पक्षियों को दाना-पानी

संपूर्ण देष में इन दिनों लॉकडाउन लगा हुआ है, इस बीच बढ़ती गर्मी के कारण खुले वातावरण में घूमने वाले पक्षियों के लिए हम सेवा कर सकते है, जिसमें उनके लिए अपने घरों की छतों एवं आंगनों में जल पात्र में जल भरकर रखना एवं उन्हें आहार के रूप में गेहूं, चावल के दाने दे सकते है। जिससे उनकी भूख-प्यास को भी शांत किया जा सकेगा।

संपादकीय

कोरोना वायरस से पैदा मुश्किलें और भी है

तालाबंदी लागू होने के बाद हजारों मजदूरों का रेला सड़कों पर उतरा, तो दुनिया ने उसे देखा। भारत में उसको लेकर अभी चर्चा शुरू हुई थी कि तबलीगी जमात के मरकज का मामला उठ गया- या कहा जाए कि उछाल दिया गया। तब से कोरोना संकट का सांप्रदायिक विमर्श छाया हुआ है। कहा जा सकता है कि केंद्र सरकार ने आधिकारिक रूप से कोरोना के लिए मरकज को जिम्मेदार नहीं ठहराया है। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पार्टी नेताओं को इस महामारी का सांप्रदायीकरण ना करने की सलाह दी है। मगर यह भी सच है कि जिस ताकत के साथ मीडिया और सोशल के जरिए बनाए गए माहौल का मुकाबला किया जाना चाहिए था, वह भी नहीं किया गया है। बहरहाल, इसका एक नतीजा यह जरूर रहा कि मजूदरों की मुश्किलों से देश का ध्यान हट गया। मुमकिन है कि सत्ताधारी जमात ने इससे राहत महसूस की हो। मगर इससे वो समस्या खत्म नहीं हो गई है। मसला सिर्फयह नहीं था कि मजदूर घरों की तरफ चल पड़े थे। असली समस्या उनकी रोजी-रोटी और उनके सामने मौजूद भुखमरी की समस्या का है। अभी हालत यह है कि बड़ी संख्या में मजदूर- जिनमें दिहाड़ी मजदूर भी शामिल हैं- ट्रेनों के रुकने की वजह से फंसे हुए हैं।

मसलन, मुंबई के भिवंडी में हथकरघा कपड़ा उद्योग के श्रमिक इसी तरह से फंस हुए हैं। कई प्रवासी मजदूर मुफ्त भोजन के सहारे किसी तरह से गुजारा कर रहे हैं। कंपनियों, मिल मालिकों या स्थानीय प्रशासन की तरफसे प्रवासी मजदूरों को दिन में दो बार भोजन दिए जा रहे हैं। मगर यह समस्या का समाधान नहीं है। ऐसी खबरें आई हैं कि जहां भोजन बंटता है वहां दर्जनों मजदूर इकट्ठा होकर दोपहर के भोजन के लिए आपस में धक्का-मुक्की करते हैं। सवाल है कि उनके लिए सोशल डिस्टेंसिंग का क्या अर्थ रह जाता है। अक्सर अपनी प्यास बुझाने के लिए अस्वच्छ पानी को पी रहे हैं। कुछ मजदूरों का हाल यह कि उन्होंने कई दिनों से स्नान तक नहीं किया है, क्योंकि उन्हें पानी उपलब्ध नहीं है या फिर उनके पास साबुन खरीदने तक के पैसे नहीं है। कुछ मजदूर शौच भी खुले में कर रहे हैं, क्योंकि शौचालय के इस्तेमाल के लिए पैसे देने पड़ते हैं। क्या यह हाल रहा तो लॉकडाउन का मकसद परास्त नहीं हो जाएगा?

गांवों को संकट से उबारने के लिए

आलोक जोशी
वरिष्ठ पत्रकार

लॉकडाउन ने कुछ चीजों को पीछे खिसका दिया है। उत्तर भारत में गेहूं की खरीद इस वक्त जोरों पर होनी चाहिए थी। हालांकि इस बार मौसम कुछ मेहरबान है। गरमी तेज नहीं हुई है, इसलिए कुछ राहत है। पंजाब ने खरीद की तारीख बढ़ाकर 15 अप्रैल और हरियाणा ने 20 अप्रैल कर दी है। मध्य प्रदेश और गुजरात से, जहां फसल जल्दी आ जाती है, और मार्च में ही सरकारी खरीद शुरू हो जाती थी, अभी तक कुछ खबर नहीं है। उत्तर प्रदेश में भी 1 अप्रैल से खरीद शुरू हो जानी थी, मगर लॉकडाउन के बीच वहां भी काम शुरू होने की कोई खबर नहीं है। जिन किसानों के परिवार में काम करने वाले लोग हैं, वे तो फसल काट पा रहे हैं, लेकिन जो मजदूरों के भरोसे थे, उनके लिए मुश्किल खड़ी हो गई है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर नजर रखने वालों का कहना है कि गांवों के कई परिवारों का कोई न कोई सदस्य शहर में था और वक्त-जरूरत वहां से पैसे भी भेज दिया करता था। अब जो भगदड़ मची, तो लोग शहरों से भागकर या तो गांव पहुंच गए हैं या फिर रास्ते में कहीं अटके हैं। अब तो वे खुद ही गांव की अपनी खेती-बाड़ी के भरोसे लौट रहे हैं। भारतीय किसान शक्ति संघ के अध्यक्ष चौधरी पुष्पेंद्र सिंह का कहना है कि सबसे खराब हाल इस वक्त दूध कारोबारियों का है। गांवों के कुल कारोबार में 30 फीसदी पशुपालन, यानी मुख्यतरू दूध का कारोबार है। लॉकडाउन के बाद शहरों में दूध की मांग 30 से 35 फीसदी कम हो गई है। चाय की दुकानें बंद हैं, मिठाई की दुकानें बंद हैं, और सरकारी से लेकर प्राइवेट डेयरी तक की खरीद में गिरावट आई है। हालांकि देश में दूध की नदियां बहाने वाले अमूल ने इस वक्त किसानों को सहारा देनेके लिए दूध का खरीद-मूल्य बढ़ाया है, लेकिन उसके अलावा सभी ने दाम गिरा दिए हैं। शुरुआत मदर डेयरी ने की थी और फिर प्राइवेट डेयरी वालों ने भी वही रास्ता पकड़ लिया।

इस मुसीबत का दूसरा सिरा यह है कि जानवरों का चारा महंगा हो गया। फैक्टरियां बंद होने की वजह से खली, चूरी, बिनौला और छिलका प्रोसेस होना बंद है, इसलिए फीड का मिलना मुश्किल है और उसके दाम भी चढ़ गए हैं। मजबूरी में किसान कम चारा डाल पा रहे हैं, तो भैंस ने भी दूध देना कम कर दिया है। जो लोग मुरगी और अंडे का कारोबार करते थे, उन पर पहली मार तो इस अफवाह से पड़ी कि इससे कोरोना फैल सकता है और उसके बाद नवरात्रि आ गई। ट्रांसपोर्टेशन में भी बड़ा संकट है।

यही हाल सब्जियों का है। फसल अच्छी है, मगर तोड़नेके लिए मजदूर नहीं हैं। मजदूर आ भी जाएं, तो फसल बाजार तक कैसे जाए? ऐसे में, उस किसान का हाल सोचिए, जो छह महीने में एक बार फसल बेचता है और इस वक्त इंतजार कर रहा था कि फसल कटे, खरीद हो, और भुगतान मिले। बहुत से किसान तो खेत से फसल सीधे मंडी पहुंचा देते हैं या व्यापारी को बेच देते हैं। इस वक्त वह फसल भी फंस गई है। अब ऐसे किसानों को बोरे खरीदने होंगे, पैकिंग और स्टोरेज पर खर्च करना पड़ेगा। उसके बाद क्या होगा, पता नहीं। खेत से बाजार तक माल पहुंचाने वाली चेन फिलहाल बंद पड़ी है।

पहला रास्ता एकदम साफऔर सीधा है। सरकार ट्रकों की आवाजाही खोल दे। जल्दी से जल्दी। बेशक नियम-कायदे तय करे, ड्राइवरों को ट्रेनिंग दे, सफाई और सुरक्षा का इंतजाम करे, मगर ट्रक चलने से आपूर्ति शृंखला का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा काम करने लगेगा। इसके लिए पुलिस को खास हिदायत देनी होगी कि इस वक्त ट्रक वालों को बेवजह परेशान न किया जाए। यह भी सुझाव दिया जा रहा है कि खासकर सब्जी उगाने वाले किसानों को छूट दी जाए, ताकि वे अपनी फसल सीधे नगर की बस्तियों में जाकर बेच दें। पास के शहर में भी लोगों को सस्ते में सब्जियां मिल जाएंगी।

एक बड़ा सवाल यह भी है कि शहरों में रहने वाले जो लोग लौट आए हैं, अब वे गांव में रहेंगे, तो करेंगे क्या? खेती के भरोसे इतने लोगों का गुजारा हो नहीं सकता, क्योंकि रकबा छोटा होता जा रहा है और परिवार बड़े। इसीलिए लोग भागकर शहर जाते थे। ऐसे में, अब जरूरी है कि लोगों के लिए वहीं रोजगार पैदा किए जाएं, जिसकी योजनाएं और घोषणाएं लंबे समय से चल रही हैं, या फिर इन सबकी जेब में पैसे डालने का इंतजाम किया जाए, जिसे वे खर्च कर सकें। एक रास्ता वह है, जो अभिजीत बनर्जी ने सुझाया था। सरकार सबको कुछ न कुछ पैसा बांटे। एक मांग यह है कि पीएम किसान योजना के तहत 8.7 करोड़ किसानों को जो 6,000 रुपये सालाना दिए जा रहे हैं, उन्हें बढ़ाकर कम से कम 24,000 रुपये कर दिया जाए। इसी तरह, महिलाओं के जन-धन खाते में 500 रुपये डालने का जो एलान किया गया है, उसका दायरा बढ़ाकर इतनी रकम सारे जन-धन खातों में डाली जाए। सबसे अहम सुझाव यह है कि किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट तीन लाख रुपये से बढ़ाकर साढ़े चार लाख या छह लाख रुपये कर दी जाए। इससे गांवों में मांग पैदा होगी, इकोनॉमी का चक्का घूमेगा और दबाव में फंसी भारत की अर्थव्यवस्था को गांवों से सहारा मिलेगा।

हजारों ऐसे लोग हैं, जो बरसों बाद अपने-अपने गांव लौटे हैं। इतने दिनों में हो सकता है कि उनके मन में कुछ अंकुर फूटे हों। वे अपने टूटे-फूटे घरों की मरम्मत करवाने की सोचें। खेत और फसल से जुड़ाव महसूस करें। उत्तराखंड में जो गांव 'घोस्ट विलेज' या भूतिया गांव कहलाते हैं, वहां इंसान दिखने लगे हैं। इन लोगों के लिए ही नहीं, इस देश और समाज के लिए भी यह मौका है, इन्हें वापस इनकी जड़ों से जोड़ने का। थोड़ी सावधानी से काम किया जाए, तो गांवों में कारोबार, रोजगार और कमाई के साधन ही खड़े नहीं होंगे, अर्थव्यवस्था को एक नई ताकत भी मिल सकती है और विकास का एक नया मॉडल भी सामने आ सकता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

काम की बात

छोड़ देने की प्रक्रिया में आप बहुत सी चीजें खो देंगे, लेकिन आप खुद को पा लेंगे।

एक सलाह

दो तरह की चॉइस है आपके पास में कि मुझे जिंदगी को जीना है या काटना है।

कोविड-19 युद्ध में ग्राम पंचायतों की भूमिका

अजय पाराशर, स्वतंत्र लेखक

वास्तविक हिंदोस्तान आज भी गांवों में ही बसता है। शहरों में स्वास्थ्य सुविधाओं की तस्वीर गांवों से बेहतर है और तुलनात्मक रूप से शहरी इलाकों के लोग गांव के लोगों से अधिक जागरूक हैं। ऐसे में कोविड-19 या कोरोना वायरस जैसी खतरनाक वैश्विक महामारी से लड़ने एवं बचाव में ग्राम पंचायतों की भूमिका और भी अहम हो जाती है। ग्रामवासियों के सहयोग से तमाम पंचायती राज संस्थान आपस में मिलकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के गांवों को स्वावलंबन की ओर अग्रसर करने और उन्हें पूरी तरह स्वावलंबी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ये संस्थान केंद्र और प्रदेश सरकारों द्वारा जारी लॉकडाउन निर्देशिका के पालन, भ्रामक जानकारियों के फैलाव को रोकने, कर्फ्यू के दौरान लोगों के बाहर न निकलने, दुकानों पर अनावश्यक भीड़ को रोकने, सोशल डिस्टेंसिंग, अपने इलाकों में बाहर से आए व्यक्तियों की सही जानकारी जुटाने और उसे प्रशासन को मुहैया करवाने, संक्रमित व्यक्तियों की पहचान एवं आइसोलेशन, संभावित संक्रमित व्यक्तियों के घर पर ही उनके संगरोध, साफ-सफाई, आपदा प्रबंधन समितियों के गठन, आवश्यक कार्यों के लिए बुजुर्गों के स्थान पर युवाओं को भेजने और जिन व्यक्तियों में सामान्य सर्दी-जुकाम और फ्लू के लक्षण हों, उन्हें मुंह पर रूमाल और टिशू पेपर के प्रयोग के अलावा आवश्यक सावधानी बरतने और सभी लोगों को समय-समय पर हाथ धोने या एल्कोहल आधारित हैंड रब सेनिटायजर्स का इस्तेमाल करने हेतु प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि वर्तमान वैश्विक आपदा के समय में कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव एवं फैलने से रोकने में सभी पंचायती राज संस्थान अपने क्षेत्रों में अपने स्तर पर इस महामारी के संक्रमण से संबंधित तमाम जानकारियां उपलब्ध सुलभ साधनों के माध्यम से सभी ग्रामवासियों तक पहुंचाना सुनिश्चित कर सकते हैं। सभी पंचायती राज संस्थान आपस में बेहतर समन्वय स्थापित कर अपने इलाकों में परंपरागत रूप से डोंडी पिटवाकर लोगों को जागरूक बना सकते हैं। इसके अलावा हर घर में पंफ्लेट बांट कर भी लोगों को जानकारी प्रदान की जा सकती है। दीवार लेखन के अतिरिक्त

एसएमएस और व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से लोगों को आपस में सोशल दूरी बनाने के संदेश और जानकारी प्रदान की जा सकती है। अकसर लोग धार्मिक समारोहों और शादी-ब्याह में लाउडस्पीकर का इस्तेमाल करते हैं। जिला प्रशासन तो अपने स्तर पर लोगों को जागरूक बनाने के लिए इस माध्यम का प्रयोग कर रहा है।

किंतु अगर पंचायती राज संस्थान चाहें तो वे भी इसके माध्यम से आवश्यक जानकारी लोगों तक पहुंचा सकते हैं। इसके अलावा सोशल दूरी के नियमों को ध्यान में रखकर अन्य स्थानीय उपाय भी किए जा सकते हैं। इसके अलावा ग्राम पंचायतें अपने इलाकों में कोरोना वायरस से होने वाले संक्रमण से बचाव के उपायों में ग्राम पंचायत सीमा में आने-जाने वाले लोगों की आवाजाही पर पूर्ण प्रतिबंधित सुनिश्चित कर सकती हैं। ये संस्थाएं लोगों को कर्फ्यू के दौरान आने-जाने में पूरी तरह प्रतिबंधित करने में सक्षम हैं और छूट के दौरान भी ये संस्थाएं उन्हें अनावश्यक रूप से इधर-उधर न जाने और अपने घरों के समीप ही खरीददारी करने हेतु प्रेरित कर सकती हैं। संबंधित ग्राम पंचायत के व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह अगर किसी कारणवश किसी और स्थान पर रुका हुआ है, तो उनका हाल-चाल पूछकर उनकी खाने-रहने और आवश्यक सामग्री का प्रबंध करने में वहां के स्थानीय प्रशासन से मदद ली जा सकती है। उन्हें तमाम हेल्पलाइन नंबर उपलब्ध करवाए जा सकते हैं ताकि जरूरत पड़ने पर उन्हें हरसंभव मदद मिल सके। समय-समय पर उनका हौसला बढ़ाने में यह संस्थान अहम भूमिका निभा सकते हैं। किसी भी स्थिति में डर, भय एवं भ्रामक जानकारियों के फैलाव को रोकने में एवं उल्लंघना करने वालों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई सुनिश्चित कर सकते हैं। ये संस्थान ग्राम पंचायतों में आने-जाने वाले व्यक्तियों के पंजीकरण हेतु उपलब्ध रजिस्टर में प्रविष्टि के नियम का कड़ाई से पालन करवा सकते हैं। अपने क्षेत्रों में साफ-सफाई का पूर्ण ध्यान रखते हुए अन्य बीमारियों को फैलने से रोक सकते हैं। ग्राम पंचायतें इसमें किसी भी प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम का प्रबंधन जानने वाले व्यक्तियों, विशेषकर युवाओं की सहायता ले सकती हैं। सभी स्थानीय लोग तथा पंचायत प्रतिनिधि प्रशासन द्वारा कोरोना के खिलाफ छेड़े अभियान में संबंधित सभी निर्देशों का पालन कर अपने क्षेत्रों में संक्रमण से बचाव में महत्ती भूमिका निभा सकते हैं। इसके अलावा पंचायती राज संस्थाएं सामाजिक सुरक्षा पेंशन एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली के राशन का समयबद्ध वितरण सुनिश्चित कर सकती हैं।

कोरोनाः नेता लोग कहां छिपे हैं?

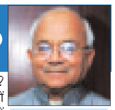

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

सरकार ने सांसदों और विधायकों के वेतन में जो 30 प्रतिशत की कटौती की है और 10 करोड़ रुपए की सांसद निधि पर भी रोक लगा दी है, यह अत्यंत सराहनीय और अनुकरणीय कदम है। वैसे केंद्र और राज्यों की सरकारें कोरोनाग्रस्त लोगों की जबर्दस्त सेवा कर रही हैं और सरकार द्वारा उठाया गया यह कदम हमारे नेताओं की इज्जत बचाने में जरुर कारगर होगा। कोरोना-संकट ने यदि किसी वर्ग को कठघरे में खड़ा किया है तो वह हमारे नेताओं को ! देश के समाजसेवी, धर्मध्वजी, जातीय संगठन और सांस्कृतिक संस्थाएं भी जरुरतमंद लोगों की जी-जान से सेवाओं में लगी हुई हैं लेकिन हमारे नेतागण कहीं भी दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि भारत के राजनीतिक दल छुट्टी पर चले गए हैं। मानो वे सब अज्ञातवास में खो गए हैं।

कोई नेता सड़कों पर, मोहल्लों में, गलियों में, झोपड़पट्टियों में दिखाई नहीं पड़ता। न तो वे भूखों को खाना खिला रहे हैं, न मरीजों को अस्पताल पहुंचा रहे हैं और न ही वे घर से बाहर निकलकर लोगों को तालाबंदी की सीख दे रहे हैं। वे तो ताली-थाली बजाने, बिजली बुझाने- दीया जलाने और टीवी चौनलों पर रटे-रटाए बयान देने और नौटंकियां करने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान रहे हैं।

मैं पूछता हूं कि भाजपा के 11 करोड़ सदस्य, कांग्रेस के 2-3 करोड़ और प्रांतीय पार्टियों के लाखों सदस्य कहां अर्न्तध्यान हो गए हैं ? वे वोट मांगने तो घर-घर जूतियां चटकाते फिरते हैं और अब सेवा का काम उन्होंने दूसरों के मत्थे मढ़ दिया है। वे क्या नेता कहलाने के योग्य हैं ? आपने टीवी चौनलों और अखबारों में नेताओं के एक से एक बनावटी चित्र देखे होंगे। वे कैसे थालियां बजा रहे हैं, कैसे दीये जला रहे हैं, कैसे दीवाली मना रहे हैं ? क्या आपने किसी नेता को सड़कों पर भूखे मरते हुए लोगों पर आंसू बहाते देखा है?

इस संकट के समय वे जनता से बड़ी-बड़ी उम्मीदें लगाए हुए हैं। वे चाहते हैं कि सब लोग उनके कहे का पालन करें। वे आज के लालबहादुर शास्त्री बनने की फिराक में हैं लेकिन वे अपनी कथनी और करनी से स्वयं को लालबहादुर नहीं, गालबहादुर सिद्ध कर रहे हैं। वे अपनी पार्टियों के कार्यकर्ताओं को सेवा-कार्यों में क्यों नहीं भिड़ाते ? इन पार्टियों के प्रवक्ता टीवी चौनलों पर जनता को कोरोना-युद्ध जीतने के लिए प्रेरित करने की बजाय एक-दूसरे पर हमले बोल रहे हैं। आगे की नहीं सोच रहे हैं। बासी कढ़ी उबाल रहे हैं।

अर्थव्यवस्था को टुकड़ों में बांटिए

डॉ. भरत झुनझुनवाला
आर्थिक विशलेषक

कोरोना वायरस का अर्थव्यवस्था पर दीर्घकालीन प्रभाव तीन अनिश्चितताओं से निर्धारित होगा। पहली अनिश्चितता यह कि इसके नियंत्रण के लिए वैक्सीन का आविष्कार हो पाता है या नहीं। वैक्सीन के आविष्कार हो जाने से इस रोग को थामा जा सकेगा। इसके अभाव में यह रोग और बढ़ सकता है। दूसरी अनिश्चितता यह कि गर्मी के मौसम में यह वायरस कितना स्वनियंत्रित होता है। गर्मी से इसके मर जाने के बाद अर्थव्यवस्था को कुछ गति मिल सकती है। गर्मी में यह छिप के रहा तो बाद में भी समस्या बनी रहेगी। तीसरी अनिश्चितता यह है कि सामान्य फ्लू की तरह इस वायरस से आम आदमी के शरीर में इम्युनिटी यानी प्रतिरोधक शक्ति का स्वतः विकास होता है या नहीं। यदि इम्युनिटी का विकास हुआ तो आने वाले समय में फ्लू आदि रोगों की तरह कोरोना का विस्तार सीमित हो जाएगा अन्यथा यह चलेगा। यदि ये अनिश्चितताएं नियंत्रण की दिशा में बढीं तो अर्थ व्यवस्था शीघ्र ही पुनः पटरी पर आ जाएगी जैसे अंग्रेजी का 'यू' अक्षर होता है, लेकिन यदि ये अनिश्चितताएं विपरीत दिशा में गई तो अर्थव्यवस्था का आकार अंग्रेजी के 'एल' अक्षर की तरह हो जाएगा और अर्थव्यवस्था नीचे के स्तर पर लंबे समय तक बनी रहेगी। वर्तमान समय में यह कहना मुश्किल है कि अर्थव्यवस्था का आगामी आकर 'यू' के आकार में होगा अथवा 'एल' के आकार में।

बहरहाल 21 दिन के लॉकडाउन का ही लंबा प्रभाव पड़ेगा। सर्व प्रथम जिन लोगों ने बैंक से ऋण ले रखा है उनके द्वारा ली गई रकम पर ब्याज चढ़ता जाएगा जबकि उस रकम से बनाई गई फैक्टरी या व्यापार ठप पड़ा रहेगा। यानी आय शून्य, लेकिन खर्च बढ़ता जाएगा इसलिए कई उद्योगों, विशेषकर छोटे उद्योगों, का दीवालिया निकलेगा। रोजगार कम होने से लॉकडाउन के बाद भी बाजार में मांग नहीं बनेगी। यदि बैंकों ने इस अवधि के ब्याज को माफ कर दिया तो यह संकट बैंक पर आएगा। बैंक ने जमाकर्ताओं से रकम ले रखी है और उस पर बैंक को ब्याज तत्काल देना होगा जब कि उनके द्वारा उधार दी गई रकम से इस अवधि में उनको आय नहीं होगी। बैंकों की समस्या बढ़ेगी। यदि बैंकों को इस संकट से बचाने के लिए सरकार ने पूंजी निवेश किया तो यह संकट बैंक से खिसककर सरकार पर आएगा। सरकार बाजार से ऋण लेकर बैंकों में निवेश करेगी परंतु इस निवेश से सरकार की आय में वृद्धि नहीं होगी। यदि सरकार ऋण लेकर हाई-वे बनाती तो उस पर आवागमन जादा होता जिसके कारण अर्थव्यवस्था बढ़ती और सरकार को टैक्स अधिक मिलता, लेकिन ऋण लेकर बैंक के घाटे की भरपाई करने से ऐसी अतिरिक्त आय नहीं होगी। सरकार द्वारा आज लिया गया ऋण भविष्य पर बोझ बनेगा। इसलिए 21 दिन के लॉकडाउन का ही प्रभाव लंबा खिंचेगा।

इसी प्रकार मौद्रिक नीति की भी सीमा है। सरल मौद्रिक नीति के अंतर्गत रिजर्व बैंक ब्याज दरों को कम कर देता है। रिजर्व बैंक को छूट होती है कि अपने विवेक के अनुसार वह ब्याज दरों को कम करे। इन कम ब्याज दरों पर कामर्शियल बैंक मनचाही रकम को रिजर्व बैंक से ऋण के रूप में ले सकते हैं। इसके बाद बैंक द्वारा उस रकम को सरकार को अथवा दूसरे उद्योगों को ऋण के रूप में दिया जाता है, लेकिन रिजर्व बैंक यदि ब्याज दरों को शून्य भी कर दे तो भी जरूरी नहीं कि कामर्शियल बैंक रकम को लेकर उद्योगों को देने में सफल होंगे। यह बात जापान के अनुभव में स्पष्ट देखी जा सकती है। वहां बीते कई वर्षों से केंद्रीय बैंक ने ब्याज दर शून्य कर रखी है। अमरीका ने भी कोरोना संकट आने के बाद ब्याज दर को शून्य कर दिया है, लेकिन शून्य ब्याज दर पर भी उद्यमी अथवा व्यापारी ऋण लेकर निवेश करने को तैयार नहीं है और उपभोक्ता ऋण लेकर बाइक या फ्रिज खरीदने को तैयार नहीं है क्योंकि इन्हें आने वाले समय में होने वाली आय पर भरोसा नहीं है। इसके अलावा नोट छपने की भी सीमा है। यदि नोट छापने मात्र से आर्थिक विकास हो सकता होता तो जवाहरलाल नेहरू के समय ही रिजर्व बैंक ने भारी मात्रा में नोट छापकर आर्थिक विकास हासिल कर लिया होता, लेकिन ऐसा नहीं होता है। कारण यह कि जब अधिक मात्रा में नोट छापे जाते हैं तो बाजार में मूल्य बढ़ने लगते हैं। जैसे यदि बाजार में 100 किलो गेहूं है और वर्तमान में बाजार में 2,000 रुपए की मुद्रा प्रचलन में है तो गेहूं का दाम 20 रुपए होगा, लेकिन यदि रिजर्व बैंक ने अधिक नोट छाप कर बाजार में 20,000 रुपए की मुद्रा प्रचलन में ले आई तो गेहूं का दाम भी समानांतर रूप में 20 रुपए किलो से बढ़कर 200 रुपए प्रति किलो हो जाएगा। यही कारण है कि द्वितीय विश्व युद्ध के अंत के समय जर्मनी में एक डबल रोटी को खरीदने के लिए लोगों को लाखों मार्क ले जाने पड़ते थे। तात्पर्य यह कि मौद्रिक नीति से अर्थव्यवस्था को बढ़ाना थोड़े समय के लिए संभव होता है जब तक महंगाई न बढ़े। जब नोट छापने से महंगाई बढ़ने लगती है तो यह नीति पूरी तरह फेल हो जाती है। स्पष्ट है कि कोरोना के 21 दिन के संकट का ही न तो वित्तीय नीति में हल है न मौद्रिक नीति में, मेरे आकलन में कोरोना का सामना करने के लिए हमें अर्थव्यवस्था को छोटे-छोटे हिस्सों में बांट देना चाहिए जैसे संयुक्त परिवार को साथ में बनाए रखने के लिए कभी-कभी किचन को अलग करना होता है। हर राज्य के चारों तरफदीवार खड़ी कर देनी चाहिए। जैसे यदि महाराष्ट्र में कोरोना का संकट है, तो उस संकट को दूसरे राज्यों में फैलने से रोकने के लिए कर्नाटक, मध्य प्रदेश और गुजरात के चारों तरफदीवार कड़ी कर देनी चाहिए। लोगों का आवागमन बंद कर देना चाहिए जिससे महाराष्ट्र का संकट महाराष्ट्र तक ही सीमित रहे और दूसरे राज्यों में न बढ़े। समस्या यह होगी कि यदि गुजरात में दूसरे राज्यों से लोगों का आवागमन सीमित हो गया तो गुजरात के उद्योगों को अपने ही कर्मियों, इंजीनियरों और डाक्टरों से अर्थव्यवस्था चलानी होगी।

मान लीजिए महाराष्ट्र के इंजीनियर अधिक कुशल है। गुजरात में उनका प्रवेश बंद हो जाएगा। तब गुजरात को अपनी तुलना में अकुशल इंजीनियर से उत्पादन करना होगा। इसी प्रकार महाराष्ट्र को गुजरात से कुशल फिटर या डाक्टर मिलना बंद हो जाएगा। इस आवागमन के अवरुद्ध होने से गुजरात और महाराष्ट्र दोनों में ही उत्पादन लागत में वृद्धि होगी, लेकिन हम आर्थिक संकट से उबर सकेंगे। गुजरात में आर्थिक गतिविधियां सामान्य रूप से चल सकेंगी क्योंकि दूसरे राज्यों से गुजरात में कोरोना का प्रवेश नहीं हो सकेगा। अतः हमें तत्काल अर्थव्यवस्था को छोटे टुकड़ों में बांट कर मनुष्यों के आवागमन को इनके बीच सीमित करने की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे उन राज्यों में लॉकडाउन खोला जा सके जहां संक्रमण सीमित है।

चाणक्य नीति

धन के लोभियों के लिए मांगने वाला शत्रु रूप है, क्योंकि याचक को देने के लिए उन्हें धन का परित्याग करना पड़ता है। मूर्खों को समझाने-बुझाने वाला व्यक्ति अपना शत्रु लगता है क्योंकि वह उनकी मूर्खता का समर्थन नहीं करता। परपुरूष से संबंध रखने वाली दुराचारिणी स्त्रियों के लिए उनका पति शत्रु है, क्योंकि उनकी स्वतंत्रता और स्वच्छंदता में बाधा पड़ती है। चोर चंद्रमा को अपना शत्रु समझते हैं, क्योंकि उनको अंधेरे में छिपना सरल होता है।

भक्ति ही आध्यात्मिक चिंतन का एकमात्र मार्ग है।

सबसे उचित पथ भक्ति का पथ है। जहां पूर्ण आत्मसमर्पण होता है। यही कहना चाहिए कि 'हे परमात्मा तुम ही मेरे निर्माता हो, मैं तुम्हारा क्षुद्रतम अणु हूं, जो तुम्हारी ही कृपा पर निर्भर है, मैं मानस आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होना चाहता हूं। मुझ पर अनुकंपा करो।' और जब कोई अपने उस लक्ष्य को पूर्ण शुद्धता से चाहता है, तो वह उसे अवश्य मिलता है। परमपुरूष तो सदा तुम्हारे साथ है। यह जो महान है, सदा तुम्हारे सहाय है, जिनकी कृपा से मानव की आध्यात्मिक उन्नति अवश्य होगी और उसे मोक्ष की प्राप्ति होगी। यह रास्ता कोई कांटों से भरा पथ नहीं है। तब यह क्या है, यह अत्यंत सहज एवं आनंद का पथ है। इसलिए उन पर ही निर्भर रहो, जैसे एक शिशु अपनी माता पर निर्भर है। प्रथम दो स्तर पर, भौतिक तथा मानसिक है। इन क्षेत्रों में सामंजस्य की आवश्यकता होती है। पर तृतीय क्षेत्र में अर्थात् मानस आध्यात्मिक क्षेत्र में सामंजस्य का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि तुम परमपिता की ही गोद में हो, जो सर्वत्र व्याप्त है।

वह भौतिक जगत है। वह मानसिक जगत में है। इस कारण जब तुम उनकी गोद में हो उस समय सामंजस्य का प्रश्न नहीं उठता। चतुर्थ आध्यात्मिक स्तर है। आध्यात्मिक स्तर क्या है? सृष्टि की हर वस्तु चाहे वह भौतिक जगत की हो अथवा मानसिक या आध्यात्मिक जगत की, सब कुछ परम चौतन्य सत्ता का ही अभिप्रकाश है। इस कारण सब यही भावना मन में धारण करेंगे कि इस विश्व की हर वस्तु ही आध्यात्मिक है। कुछ भी भौतिक अथवा मानसिक नहीं। सब कुछ उस परमात्मा के हाथ में है। इस प्रकार जब मनुष्य इस परम सत्य को पहचान लेता है, तभी वह परमानंद की अनुभूति करता है। यही मोक्ष का एक मात्र रास्ता है। यही चिरंतन काल के लिए मुक्ति का पथ है। तुम्हारा जीवन भक्ति से आरंभ होकर, भक्ति में ही विलीन हो जाएगा। भक्ति ही धर्म है, भक्ति ही आध्यात्मिक चिंतन का मार्ग है तथा हर एक बुद्धिजीवी तथा आध्यात्मिक चिंतक के लिए यही एकमात्र सिद्धांत है।

मप्र : गहराएगा कोरोना संकट ?

सतीश एलिया

मध्य प्रदेश में बदले राजनीतिक घटनाक्रम के कारण कोरोना के खिलाफ लंबी लड़ाई की जो कमजोर तैयारी बीते माह के आखिरी दिनों में हुई, उसका नतीजा प्रदेश में कोरोना पॉजिटिव मामलों की बढ़ोतरी के रूप में सामने आ रहा है। करीब एक पखवाड़ा पहले मुख्यमंत्री बने शिवराज सिंह चौहान अकेले ही करीब ढाई दर्जन मंत्रियों का काम कर रहे हैं। कई बड़े अफसर और मैदानी अफसरों की बदली से भी हालात कठिन होते गए। इसके बाद से मुख्यमंत्री लगातार कोरोना पर पूरी तरह से सरकार और शासन को केंद्रित किए हुए हैं लेकिन नौकरशाही के फैसलों और जानकारियां जाहिर नहीं करने के चलते स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख सचिव, संचालक, अपर संचालक से लेकर कई अफसर व कर्मचारी कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं। इसके पीछे अहम कारण उनमें से कुछ के परिवारों के सदस्यों का अमेरिका जैसे कोरोना प्रभावित देशों से आने की जानकारी के बावजूद इन अफसरों का खुद को क्वारंटीन करने के बजाय सरकारी कामकाज में जुटे रहना और परिवार की ट्रैवल हिस्ट्री को अपने तक ही सीमित रखने जैसी गंभीर लापरवाही शामिल है।

सरकार चलाने में होती सहूलियत

मध्य प्रदेश विधानसभा में अभी 230 में से 24 सीटें रिक्त हैं। यानी वर्तमान में 206 विधायक हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के मंत्रिमंडल में विधायक संख्या के 15 फीसदी यानी 29 मंत्री हो सकते हैं। कोरोना संकटकाल में स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा, नगरीय प्रशासन, होम, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, ऊर्जा, श्रम समेत करीब एक दर्जन ऐसे महकमे हैं, जिनमें समन्वय और प्रशासन चुस्ती आवश्यक है। पूरा मंत्रिमंडल भले न सही लेकिन एक दर्जन मंत्री बनाए जाते तो बेहतर काम हो सकता था। वर्तमान में अकेले मुख्यमंत्री समूची सरकार की तरह दिन-रात जूझ रहे हैं। तंत्र का आलम यह है कि 21 के टोटल लॉकडाउन में भी राजधानी भोपाल समेत ज्यादातर शहरों व कस्बों में इसका उल्लंघन होता रहा। कोरोना संक्रमण के फैलाव की आशंका के चलते अब मंगलवार से सख्त लॉकडाउन के निर्देश दिए गए हैं।

बेचैन हैं भाजपा के वरिष्ठ विधायक

भाजपा विधायक दल के मुख्य सचेतक पूर्व मंत्री नरोत्तम मिश्रा कमलनाथ सरकार के तख्ता पलट में महत्वपूर्ण किरदार थे लेकिन भारी सक्रियता के बाद अचानक कोरोना संकट में कोई सक्रिय भूमिका न मिलने से बीते एक पखवाड़े से वे अपने घर में नाती-पोतों के साथ खेलते, गायों की सेवा करते और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए अपने विधानसभा क्षेत्र दतिया के हालचाल जानते हुए न्यूज चौनलों पर दिखाए जा रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष और मंत्री रहे गोपाल भार्गव भी यदाकदा टीवी चौनलों पर दिखते हैं। दूसरी तरफभाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा अकेले ऐसे नेता हैं जो शिवराज की ही तरह खबरों में दिख रहे हैं। दूसरी तरफएक महीने पहले तक बतौर मंत्री भारी सक्रिय रहे सिधिया समर्थक पूर्व मंत्री दल बदलकर विधायक भी नहीं रहे लेकिन अब वे भी निष्क्रियता के इस दौर में परेशान हैं। यह बेचौनी यदाकदा सोशल मीडिया या प्रादेशिक न्यूज चौनलों में उनकी सक्रियता में दिखती रहती है।

जमातियों की खोज खबर रखने में विफल

दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके से मरकज की जमात से मप्र लौटे लोगों में जमातियों की तादाद तो बताई जाती रही लेकिन वे कहां-कहां गए, यह एक हफ्ते बाद भी पूरी तरह पता नहीं है। कई जमाती छोटे-छोटे कस्बों जिनमें तहसील मुख्यालय शामिल हैं, पहुंचे थे और वे वहां मस्जिदों और घरों में भी रुके बताए गए हैं। विदिशा जिले के सिरोंज में एक कोरोना पॉजिटव पाए जाने के बाद अब अन्य कस्बों में भी जमातियों के आने, रुकने और चले जाने की खबरों से लोगों में दहशत है। यह दहशत अब गांवों तक पहुंच रही है। लेकिन सरकारी तंत्र का इंटेलीजेंस फेल रहा है।

विदेश से लौटे लोगों की सूची के बाद भी ट्रैकिंग नहीं

करीब एक पखवाड़े पहले सूची जारी होने के बावजूद विदेश यात्रा की हिस्ट्री वाले परिवारों की जांच नहीं की गई। अकेले भोपाल शहर में ऐसे लोगों की सूची 71 पेज की थी। इनमें अब कोरोना पॉजिटिव पाई गई स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख सचिव पल्लवी जैन गोविल का पुत्र तथा स्वास्थ्य विभाग की अपर संचलक वीणा सिन्हा का पुत्र भी शामिल था। यह अफसर न केवल मुख्यमंत्री के साथ बल्कि स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा विभाग के अफसरों, डॉक्टरों तथा अन्य स्टाफके संपर्क में सतत बने रहे। अब यह आशंका गहरा रही है कि अकेले स्वास्थ्य महकमे के एक दर्जन अफसर आदि कोरोना पॉजिटव पाए जाने के बाद उनके संपर्क में रह चुके कितने लोगों को यह वायरस संक्रमण सामने आ सकता है? चौंकाने वाली बात यह भी है कि स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख सचिव ने खुद को किसी अस्पताल में इलाज के लिए ले जाने से साफइनकार किया और उन्होंने घर पर ही इलाज के इंतजाम कराए। इस दौरान वे घर से ही मुख्यमंत्री के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से समीक्षा में शामिल हो रही हैं, इसके लिए उनके बंगले पर अधिकारी-कर्मचारी भी जाते रहे।

खतरे की आशंका के बीच लापरवाही जारी

बीते तीन माह में भोपाल के अलावा अन्य जिलों तक अमेरिका, इटली, दुबई, ब्रिटेन आदि से यात्रा कर लौटे लोगों की अबतक न तो पहचान की कई है और न ही जांच, वह भी आधिकारिक सूची उपलब्ध होने के बावजूद। इनके संपर्क में रहे हजारों लोग अब खुद की सेहत को लेकर चिंतित हैं। आंकड़ों में अभीतक मप्र देश में नौवें क्रम पर है। यहां 256 मामले सामने आ चुके हैं, इनमें से 230 कोरोना पॉजिटिव में से 15 की मौत हो चुकी है, जबकि 11 ठीक भी हो चुके हैं।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

मेडिकल विज्ञान से जुड़ी समस्या का इलाज अंधविश्वास से

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले अपनी विशाल समर्थक जमात से कोरोना वायरस के खिलाफताली और थालियां बजवाई और अब उन्होंने लोगों से लाइटें बुझवाकर अपनी-अपनी बालकॉनियों में मोमबत्ती, दीया, टॉर्च या मोबाइल की फ्लैश लाइटों से रोशनी करवाई है। प्रधानमंत्री ने अपने राष्ट्र के नाम एक संबोधन में कहा कि कोरोना के अंधकार से निकल कर प्रकाश की तरफजाने का यही रास्ता है। अब चूंकि देश के बड़े हिस्से ने विवेक का परित्याग कर दिया है, इसलिए उससे तर्क-वितर्क करने का कोई लाभ नहीं है। मगर जो लोग अब भी वास्तविकता की दुनिया में जी रहे हैं, उन्हें इससे परेशानी जरूर होगी कि मेडिकल विज्ञान से जुड़ी एक समस्या पर सरकार देश को ऐसे रास्ते पर ले जा रही है, जहां उससे उसकी जवाबदेहियों के बारे में कोई सवाल नहीं किया जाएगा। हमने सिंगापुर और कनाडा जैसे देशों के प्रधानमंत्रियों का भी कोरोना के प्रश्न पर राष्ट्र के नाम संबोधन को सुना है। उसमें कोरोना वायरस क्या है, कैसे प्रभावित करता है और इससे कैसे बचा जाए, इसकी विज्ञान-सम्मत जानकारी दी। लोगों में भरोसा बंधाया कि डरने की बात नहीं है, क्योंकि कोरोना वायरस के मृत्यु दर कम है। ये बताया कि इलाज और बचाव के क्या उपाय किए जा रहे हैं। मगर अपने देश में यह बताया गया है कि कोरना एक ऐसा अंधकार और निराशा की बात है, जिससे सामूहिक रूप से ताली बजाकर या दीपावली जैसी रोशनी करके ही निकला जा सकता है! बहरहाल, समाज की हकीकत यह है कि कोरोना वायरस के फैलते संक्रमण के बीच जिन लोगों का काम सबसे बाधारहित चलना चाहिए, उनकी समस्याओं का अंत ही नहीं हो रहा है। लगभग पूरे देश में डॉक्टरों और अन्य स्वास्थ्यकर्मियों के लिए सुरक्षा किट की कमी है। जगह-जगह बिना सुरक्षा किट के मरीजों को देखते रहने की वजह से खुद डॉक्टरों के कोविड-19 की चपेट में आने की खबरें आ रही हैं। नाजानकारी के कारण देश भर में किराए के मकानों में रहने वाले डॉक्टरों, नर्सों और दूसरे स्वास्थ्यकर्मियों के साथ एक तरह के बहिष्कार की खबरें आने लगी हैं। उन्हें वायरस का संवाहक होने के डर से किराये के घरों से निकाला जाने लगा है। कुछ जगहों से डॉक्टरों पर हमले और उनके साथ मारपीट की खबरें आई हैं। मगर इन पर कोई सवाल मेनस्ट्रीम मीडिया नहीं पूछेगा। उसके दायरे में आने वाले लोग नहीं पूछेंगे। आखिर जब मोमबत्तियां जलाकर इस अंधकार से निकला जा सकता है, तो ऐसे सवालों की क्या प्रासंगिकता है!

महावीर जयंती पर विशेष

महावीर दर्शन: समय के साथ और भी बढ़ी प्रासंगिकता

डॉ. अजय खेमरिया

मप्र में ग्लोबल जैन म्यूजियम बनाने के सरकार के निर्णय का देश भर के जैन सम्प्रदाय में स्वागत हुआ है। रायसेन जिले के सांची बौद्ध स्तूपों के आसपास यह म्यूजियम बनाया जाना है। पूरी दुनिया में यह अकेला ऐसा जैन म्यूजियम होगा जिसमें महावीर स्वामी के इर्द-गिर्द इस मत की महत्ता को तो दिखाया ही जायेगा, धर्म की उत्पत्ति से अबतक की विकास यात्रा को भी स्थापित किया जाएगा।

भगवान महावीर भारत की लोककल्याण केंद्रित चिरकालिक मत परम्परा के सबसे सशक्त संचारक हैं। उनके जीवन दर्शन की उपयोगिता मानव जाति की उम्र बढ़ने के समानांतर दुगने अनुपात में बढ़ रही है। आज पूरे विश्व के समक्ष कोरोना जैसी त्रासदी खड़ी है, जिसने मानवीय अस्तित्व पर इतनी गहरी चोट की है कि तमाम वैज्ञानिक और तकनीकी सम्पन्नता और निपुणता के बावजूद हम किंकर्तव्यविमूढ़ खड़े हैं। भौतिकता के ताप से धधकते मानव जीवन के सामने सिर्फमहावीर दर्शन ही आज कारगर समाधान नजर आता है। ष्अपरिग्रहष् और ष्अहिंसाष् के पथ पर अगर विकास को अबलंबित किया गया होता तो आज दुनिया के सामने मौजूदा समस्याओं का अंबार नहीं होता। कोरोना एक संकेत है कि हम अपनी समझ को अपरिग्रह की ओर ले चलें क्योंकि दुनिया के धनी-मानी यूरोपीय राष्ट्र आज धन, वैभव और तकनीकी के ढेर पर खड़े होकर भी अपने भगनि बन्धुओं को काल कवलित होने से नहीं बचा पा रहे हैं। प्रकृति के शोषण की जगह दोहन के जिस सिद्धान्त को भगवान महावीर ने ष्अपरिग्रह ष् का नाम दिया है असल में वह केवल आर्थिक या निजी आग्रह तक सीमित नहीं है। अपरिग्रह मानव जीवन का सार रूप है, इसकी व्याप्ति चराचर जगत तक है। जरूरत से ज्यादा का भोग और संग्रह बुनियादी रूप से ही प्रकृति के विरूद्ध है। वैश्विक बेरोजगारी, विषमता और भूख के संकट अपरिग्रह के अबलम्बन से ही दूर किये जा सकते हैं। दुनिया में चारों तरफफैली हिंसा असल अपरिग्रही लोकसमझ के अभाव का नतीजा है। व्यक्ति के रूप में हमारे अस्तित्व और समग्र उत्कर्ष के लिए जितने साधन अनिवार्य हैं, वह प्रकृति ने प्रावधित किये हैं लेकिन मनुष्य ने अज्ञानता के वशीभूत इन्द्रिय सुख के लिए न केवल प्रकृति बल्कि अपने सहोदरों का शोषण करने के जिस रास्ते को पकड़ लिया है, वही सारे क्लेश की बुनियादी जड़ है। सांगोपांग हिंसा के कुचक्र भी असल में इसी मानसिकता की उपज है।

महावीर और जैन दो ऐसे शब्द हैं जिनकी वास्तविक समझ मानव ग्रहण कर ले तो यह धरती सभी कष्ट और क्लेशों से निर्मुक्त हो सकती है। जैन आज एक वर्ग विशेष के उपनाम और जातीय पहचान तक सीमित कर दिया गया। सियासी लालच ने इसे अल्पसंख्यक का तमगा दे डाला।हकीकत यह है जैन शब्द भारत का दुनिया को एक दिग्दर्शन है जो यह समझाने का प्रयास है कि इस सांसारिक जय-विजय से परे भी एक जय है जो इन्द्रियातीत है। मनुष्यता का अंतिम पड़ाव जिस मंजिल पर जाकर स्थाई विराम पाता है वह जैन हो जाना ही है।

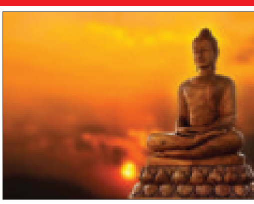

यह तथ्य है कि आज जैन मत की पालना अगर ईमानदारी से की जाती तो धरती पर मानवता और प्रकृति के संकट खड़े नहीं होते।

जैन शब्द जिन से बना है जिसका मतलब है विजेता। संसार रूपी मोहगढ़ पर विजय पाना। तपस्या और आत्मानुशासन से खुद की वासना-इच्छाओं पर विजय पाता उसे जिन कहा गया। इस दर्शन का निष्ठापूर्वक अनुपलित करने वाले जैन कहलाये। जैन मत का सबसे प्रमुख आधार त्रिरत्न और कषाय है। दोनों का अनुपालन मानव समाज की सभी बुराइयों और कष्टों का समूल नाश कर सकता है। सम्यक ज्ञान सम्यक दर्शन सम्यक चरित्र से मिलकर त्रिरत्न बना। यह तथ्य है कि जैन मत का प्रसार उस गति से नहीं हुआ जितना ये प्राचीन और लोकोपयोगी है। बुद्ध बाद में आये लेकिन पूरी दुनिया में छा गए। श्रीलंका, जापान, चीन, कोरिया, कम्बोडिया, ताईवान, बर्मा तक बुद्ध की शिक्षा और दर्शन का प्रसार हुआ। लेकिन जैन मत का प्रसार क्यों नहीं हुआ? इसका जवाब राष्ट्रसंत रहे मुनि तरुण सागर जी खुद देते थे, वे कहते रहे कि महावीर को मंदिरों से निकालो, सोने की मूर्तियों से मुक्त करो। महावीर को सड़क-चौराहे, जेल, स्कूल पर लाओ। यानी जैन मत जिस आधार पर खड़ा हुआ था जातिवाद, कर्मकांड, पुरोहित वाद की जटिलता के विरोध में जैनियों ने इसे बिसार ही दिया। आज महावीर के अनुयायियों में जातिवाद, छूआछूत है। फिजूल खर्च का आडम्बर है। जड़ता है और एक आवरण है, जिसमें किसी गैर जैन की अघोषित मनाही-सी है। कषाय इतना हावी है कि हमने त्रिरत्नों को भुला दिया। तरुण सागर जी जीवित रहते तक जिन क्रांतिकारी उपचारों की बात करते रहे वे आज भी समाज में बहुत दूर नजर आते हैं।

सच तो यह है कि भारतीयता की पुण्यभूमि पर खड़े जैन मत को ही वैश्विक मत होने का अधिकार है। महावीर-सा पैगम्बर इस सभ्यता में दूसरा नहीं। लेकिन ये भी उतना ही सच कि उनके अनुयायी उतने सफल नहीं, जितना बुद्ध और दूसरे मत सम्प्रदाय । यह बात कतिपय अप्रिय लग सकती है, तथ्य यही है कि महावीर का दर्शन भारतीयता का मूल दर्शन है। महावीर का प्रसार भारत की सनातन सभ्यता का प्रसार है। मौजूदा सभी वैश्विक संकट के निदान महावीर में अंतर्निहित हैं। हिंसा और विषमताओं को जन्म देती आर्थिक नीतियां अहिंसा और अपरिग्रह को भुला देने का नतीजा है। जनांकिकीय दृष्टि से आज भारत में यह वर्ग शून्यता की राह पर है क्योंकि जैन समाज अपनी आर्थिक सम्पन्नता का प्रयोग मंदिरों और पंचकल्याणक जैसे महंगे उपक्रमों में कर रहा है। आवश्यकता महावीर को ज्ञान जगत में स्थापित करने की है। मंदिरों के परकोटे से बाहर महावीर वाणी के स्वर ज्यादा जरूरी हैं। मिशनरीज मोड़ और मॉडल से जैन मत के मैदानी प्रवर्तन की भी आज भारत को आवश्यकता है। इससे कौन इनकार कर सकता है कि जैन संस्कार विशुद्ध रूप से भारतीयता को संपुष्ट करते हैं। खुद को अलग अल्पसंख्यक मानने की बढ़ती समझ से महावीर वाणी कमजोर ही होगी क्योंकि यह तो सनातन पंथ की बुराइयों के शमन की मानवीय धारा है।

आज दुनिया महाशक्तियों के पाप से कराह रही है, कोरोना का संकट इसकी ताजा गवाही है। विस्तारवादी और साम्राज्यवादी मानसिकता ने पूरी मानवता के समक्ष अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया है। यहां महावीर की प्रासंगिकता पूरी प्रखरता से प्रदीप्ति पा रही है। महावीर का दिगंबर रूप वन्दनीय क्यों हो जाता है, इसके जवाब में हमें वीरता को भी समझने की जरूरत है। संसार में सब वीरता का वरण करना चाहते हैं, इसका हेतु खुद के प्रभुत्व और कतिपय वर्चस्व ही है। आज आर्थिकी में सबसे शिखर पर हथियारों का बाजार है और दूसरे पर दवाएं। दोनों प्रकृति के विरुद्ध हैं। वीरता की अधिमान्यता के लिए हथियारों की होड़ है लेकिन वीर होकर कोई महावीर नहीं बनना चाहता है क्योंकि महावीर होना मतलब दिगम्बर हो जाना है। यहाँ दिगम्बर अवस्था को भाव रूप में समझने की आवश्यकता है। वीरता की यह हथियार केंद्रित होड़ न केवल खोखली है बल्कि अस्थायी भी है। जैन मत के सभी 24 तीर्थंकर क्षत्रिय बिरादरी से आये थे यानी वे वीरता से परे भी किसी अनन्त की तलाश में थे।इस अर्थ में हमें दिगम्बर अवस्था और महावीर होने को विश्लेषित करने की आवश्यकता है। दुनिया की कराहती महाशक्तियों को आज भारत की महावीर वाणी ही बचा सकती है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

कोरोना महामारी और भीलवाड़ा मॉडल

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

कोरोना वायरस के संकट से जूझने में जिस तरह भीलवाड़ा में प्रयास किए गए, यह भीलवाड़ा मॉडल के रूप में उभरकर सामने आया है। शुरुआती दौर में ही भीलवाड़ा के एक निजी अस्पताल के चिकित्सक की मामूली भूल बड़े संकट का कारण बन गई थी। जिस तरह शुरुआती दौर में भीलवाड़ा एपीसेंटर बनकर उभरा और समूचा देश भीलवाड़ा की ओर कातर दृष्टि से देखना आरंभ किया, उसी समय से राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की लगातार निगरानी का परिणाम रहा कि स्थानीय प्रशासन के समन्वित प्रयासों से भीलवाड़ा आज बेहतर स्थिति में आ गया है। सुरक्षा मापदण्डों को कड़ाई से लागू करने के साथ ही योजनाबद्ध तरीके से इस संकट से समूचे जिले और प्रदेश को संक्रमित होने से बचाने के कारगर प्रयास किए गए। इसे लेकर मुख्यमंत्री के साथ स्वास्थ्य विभाग, गृह विभाग व आपदा प्रबंधन विभाग और स्थानीय प्रशासन में समन्वय देखने को मिला। आज यह आंकड़ा 27 पर आकर टिक गया है और अच्छी बात यह है कि पिछले दिनों से जिले में एक भी पॉजिटिव प्रकरण सामने नहीं आया है। दरअसल आज जिसे भीलवाड़ा मॉडल कहा जा रहा है वह स्थानीय प्रशासन द्वारा उठाए गए कदमों और आपसी तालमेल का उदाहरण है। भीलवाड़ा कलक्टर राजेन्द्र भट्ट ने स्थिति की भयावहता समझी और भीलवाड़ा के निजी चिकित्सालय के प्रकरण के सामने आते ही 20 मार्च को ही कर्फ्यू लगा दिया। जिले की सीमाओं को सील करना दूसरी बड़ा निर्णय रहा। इसके साथ ही स्थानीय निजी अस्पतालों और होटलों को अधिग्रहित करने में देरी नहीं की। एक तरह से पूरे जिले को ही कोरेंटाइन कर दिया। लॉकडाउन की सख्ती से पालना सुनिश्चित की।

कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने का आइसोलेशन ही रोकथाम का एकमात्र विकल्प है। कमोबेश देश के सभी राज्यों में गंभीर कदम उठाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री जहां वीडियों कॉफ्रेंसिंग के माध्यम से जिला कलक्टरों से फीडबेक लेने के साथ ही आवश्यक दिशा-निर्देश दे रहे हैं वहीं स्वयं देर रात तक प्रतिदिन उच्चस्तरीय बैठकें कर प्रशासन को सक्रिय व व्यवस्थाओं को चाक-चौबंद करने में जुटे हैं। सबसे अच्छी बात यह कि राजनीति से ऊपर उठकर केन्द्र व राज्यों में बेहतर समन्वय बनाया गया है।

कोरोना वायरस की भयावहता को देखते हुए देश में प्रभावी ढंग से लॉकडाउन है। कोरोना से बचाव के लिए दूसरे के संपर्क में नहीं आना जरूरी है। प्रधानमत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर जिस तरह से 22 मार्च को समूचा देश तालियां, घंटे-घडियाल, थाली-लोटा बजाने लगे वह सामूहिक एकता और समर्पण का उदाहरण है। ठीक इसी तरह से प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी की एक आवाज पर समूचे देश में 5 अप्रेल को रात 9 बजे 9 मिनट के लिए घरों की लाइट बंद कर मोमबत्ती, दीपक, मोबाइल की लाइट आदि कर एकजुटता और कोरोना संघर्ष में जुट रहे डाक्टर्स, पेरामोडिकल स्टाफव वॉलियंटर्स के सम्मान में दीपावली जैसा माहौल बन गया, वह हमारी सामूहिक मानसिकता को दर्शाता है। हालांकि आलोचना-प्रत्यालोचना और पटाखे छोड़ने को अतिउत्साही कदम भी बताया जा रहा है पर खासबात यह है कि आज कोरोना के खिलाफसंघर्ष में सभी एकजुट हैं।

कोरोना महामारी ने सारी दुनिया को हिला कर रख दिया है। लगता है नया साल दुनिया के लिए महामारी का प्रकोप लेकर आया और मार्च आते-आते समूची दुनिया को कोरोना महामारी ने अपने गिरफ्त में ले लिया। चीन से आरंभ कोरोना महामारी से इटली, स्पेन, फ्रांस, जर्मनी, ईरान, टर्की, इंग्लैण्ड आदि में जहां गंभीर स्थिति हो गई वहीं विश्व की महाशक्ति अमेरिका भी आज सबसे गंभीर संकट में आ गया है। अमेरिका में सबसे ज्यादा 3 लाख 11 हजार से अधिक लोग संक्रमित मिले हैं। दुनिया के 194 देश कोरोना की चपेट में आ गए हैं और एक मोटे अनुमान के अनुसार 12 लाख 18 हजार से अधिक संक्रमण के मामले सामने आ चुके हैं और कोरोना वायरस के कारण 65 हजार 841 लोग मौत के आगोश में आ गए हैं। दरअसल लॉकडाउन की सख्ती से पालन के लिए सरकारों को ही नहीं आम आदमी को आगे आना होगा। जर्मनी में तो दो से अधिक लोगों के एकत्र होने पर ही रोक लगा दी गयी है। यह इसकी भयावहता को दर्शाता है।

जिस तरह सारी दुनिया कोरोना महामारी से निजात पाने के लिए एकजुट हो गई है और जिस तरह कोरोना ने सारी दुनिया को बेबस कर दिया है, यह सोचनीय है कि सिवाय आइसोलेशन या यों कहे कि सोशल डिस्टेंसिंग के कोई विकल्प नहीं है। जल्दी ही इस महामारी से निपट लिया जाएगा पर अब वैज्ञानिकों के लिए भी नई चुनौती उभर कर आएगी कि इस तरह की महामारी से निपटने का कोई रोडमैप बन सके। समूची दुनिया जिस रणनीति, संवेदनशीलता और गंभीरता के साथ जुटी है और जिस तरह से धरती के भगवान मानव सेवा में जुटे हैं, उसमें हमारी भागीदारी केवल और केवल निर्देशों के पालन और घर में ही अपने परिवार के साथ रहकर सजग नागरिक का दायित्व पूरा करना होगा। हमारी जरा-सी लापरवाही कितना विकराल रूप ले सकती है इसे हमें समझना होगा।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

महामारी बदल देगी वैश्विक कूटनीति

शशांक
पूर्व विदेश सचिव

कोविड-19 के कारण देशों की घरेलू प्राथमिकताओं के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का रूप भी बदलता दिख रहा है। वैश्विक कूटनीति के मोर्चे पर अमेरिका का डंका कमोबेश शीत युद्ध के बाद से बजता रहा है। वह दुनिया का सर्वशक्तिमान देश माना जाता है और वैश्विक राजनीति को बदलने में सक्षम रहा है। मगर अब जिस तरह से सार्वजनिक स्वास्थ्य-सेवा तमाम देशों की प्राथमिकता में मजबूती से शामिल होने वाली है, उसी तरह अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी कई तरह के उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकते हैं। संभव है, आने वाले दिनों में भारत जैसे देश एक नए नेतृत्व की भूमिका में दिखें। सवाल उठता है कि इस कयास की वजह क्या है?

दरअसल, अभी तक यही माना जाता रहा है कि अमेरिका में सारी चीजें जरूरत से ज्यादा हैं। मगर नए कोरोना वायरस ने उसे बेपरदा कर दिया है, खासतौर से स्वास्थ्य-सेवा के मोर्चे पर। वहां जिस तरह से इस संक्रमण का प्रसार बढ़ रहा है और जिस पैमाने पर लोगों की जान जा रही है, वह चिंताजनक होने के साथ-साथ चौंकाने वाली है। ऐसा इसलिए, क्योंकि अमेरिकी स्वास्थ्य-सेवा को वैश्विक स्वास्थ्य सूचकांक में पहला स्थान हासिल है। जाहिर है, कोरोना वायरस का संकट यह संकेत है कि तमाम सुख-सुविधाओं के बावजूद सार्वजनिक स्वास्थ्य को लेकर अमेरिका में कई कमियां हैं। अब इन्हें दूर करने की कोशिश होगी। इसके अलावा, वहां सामाजिक सुरक्षा की मांग भी तेज होगी। बेरोजगारी की समस्या पहले से ही रही है, जो आने वाले दिनों में गहरा सकती है। इन घरेलू समस्याओं से पार पाने का स्वाभाविक दबाव अमेरिकी राष्ट्रपति पर होगा।

बेशक फौज, अंतरिक्ष विज्ञान या नई प्रौद्योगिकी पर अमेरिका का विशेष जोर रहा है, मगर यह भी सच है कि जैविक महामारी से बचने को लेकर उसने जो तैयारी की थी, वह धरी की धरी रह गई। ऐसे में, अमेरिका अपनी इन नीतियों की फिर से समीक्षा करेगा। कारोबार के मामले में 'अमेरिका फर्स्ट' उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता रही है, लिहाजा जैविक महामारी के बचाव को लेकर भी वह इसी नीति के तहत अब काम करता दिख सकता है। संभव यह भी है कि अपनी नेतृत्वकारी भूमिका को बरकरार रखने के लिए वह रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमता) पर ज्यादा ध्यान दे।

इसी तरह, चीन की वैश्विक भूमिका भी आने वाले दिनों में बदल सकती है। बीजिंग इन दिनों अपनी बेल्ट रोड इनीशिएटिव (बीआरआई) पर तेजी से आगे बढ़ रहा था। मगर अभी तक का ट्रेंड यह है कि जिन-जिन देशों में बीआरआई परियोजनाओं पर काम हो रहे थे, वहां कोविड-19 का संक्रमण ज्यादा हुआ है। इससे इन परियोजनाओं को काफी धक्का लगा है। चूंकि इस वायरस का प्रसार उस समय शुरू हुआ, जब चीन नए साल के स्वागत में डूबा था, इसीलिए नए साल का जश्न मनाकर

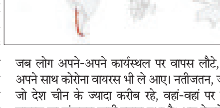

जब लोग अपने-अपने कार्यस्थल पर वापस लौटे, तो अपने साथ कोरोना वायरस भी ले आए। नतीजतन, जो-जो देश चीन के ज्यादा करीब रहे, वहां-वहां पर इस वायरस का संक्रमण काफी ज्यादा हुआ है। अब देखने में यह भी आ रहा है कि कोरोना वायरस की अपनी जंग जीतने के बाद चीन ने जिन-जिन देशों को चिकित्सकीय उपकरण भेजे, उनकी गुणवत्ता 40 फीसदी तक खराब थी। कई यूरोपीय देशों ने तो खुलकर इस पर नाराजगी जाहिर की है। इससे भविष्य में भी चीन के उत्पादों पर भरोसा डिग सकता है। रही बात दक्षिण एशिया की, तो पाकिस्तानी रणनीति से इस क्षेत्र पर दीर्घावधि में असर पड़ सकता है। असल में, पाकिस्तान अपने यहां के संक्रमित मरीजों को पीओके (पाक अधिकृत कश्मीर) और गिलगित-बाल्टिस्तान में रखने की रणनीति पर काम कर रहा है। चूंकि चीन की परियोजनाओं का विरोध इन इलाकों के लोग करते रहे हैं और इसके कारण पाकिस्तानी हुक्मरानों से वे नाराज भी रहे हैं, लिहाजा इस्लामाबाद का अपनी इस रणनीति पर आगे बढ़ना दक्षिण एशियाई क्षेत्र की भू-राजनीति को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। साफ है, आने वाले दिनों में बेल्ट रोड इनीशिएटिव, ग्लोबल कम्युनिकेशन, विमानन, पत्तन उद्योग जैसे तमाम क्षेत्रों को तेज धक्का लगने वाला है। खासकर पर्यटन उद्योग का संकट तो लंबे समय तक बना रहेगा। होटल उद्योग का रूप भी बदल सकता है। बहुत मुमकिन है कि आने वाले दिनों में यात्रा के क्रम में भी पर्यटक आइसोलेशन में रहें या फिर अपनी सुरक्षा के उपकरण साथ लेकर चलें।

ऐसी सूरत में भारत के सामने चुनौती भी होगी और अवसर भी होंगे। फिलहाल, भारत सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता कोविड-19 को पराजित करने की है। मगर जिस तरह से लॉकडाउन की शुरुआत में महानगरों से मजदूरों का हुजूम अपने-अपने गांव की ओर निकल पड़ा, उसे देखते हुए सामाजिक सुरक्षा को लेकर यहां भी नई नीति बनानी होगी। सरकार को कृषि संकट खत्म करने को लेकर खास काम करना होगा। ग्रामीण श्रम का इस्तेमाल गांव या नजदीकी शहरों में करने के माकूल इंतजाम करने पड़ेंगे। इसी तरह, शिक्षण संस्थानों की मजबूती पर भी काम करने की दरकार होगी। स्वास्थ्य सेवा की चुनौतियां तो हैं ही। अवसर की बात करें, तो वैश्विक कूटनीति में पैदा होने वाले खालीपन को भारत भर सकता है। इसके लिए हम तैयार भी दिख रहे हैं। सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट के मामले में हम सबसे आगे हैं। अपने हित में इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। रोबोटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमता में आगे बढ़ना हमारे लिए फायदेमंद होगा। इसी तरह, पिछले दिनों दक्षेस के सदस्य देशों के शासनाध्यक्षों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जोड़ने की अच्छी पहल हमारी सरकार ने की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी वैश्विक नेतृत्व क्षमता का परिचय जी-20 देशों की बैठक में भी दिया और कोरोना से जंग को वैश्विक लड़ाई में बदलने का आह्वान किया। यही कारण है कि नए वैश्वीकरण में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका की बात दुनिया के अनेक देश करने लगे हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य-सेवा के मामले में भी हम कई देशों से बेहतर हालत में हैं। देश में डॉक्टरों की कमी नहीं है, जरूरत है, तो बस उन्हें अच्छी सुविधाएं देने की। अगर केंद्र सरकार इस दिशा में कुछ ठोस कर पाई, तो स्वास्थ्य-सेवा के मामले में भी दुनिया के तमाम देश भारत की नजीर देंगे।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

आर्थिक कठिनाई से गुजर रहे अतिथि विद्वान, बेरोजगारी से परेशान

माही की गूंज, झाबुआ। कई संशोधन और विवादो से घिरी सहायक प्राध्यापक भर्ती 2017 की कांग्रेस सरकार द्वारा दिसंबर में नियुक्ति देने से 2700 अतिथि विद्वानो की रोजी रोटी चली गई थी। जिसके विरोध में दो दिसंबर को छिंदवाडा के पिपरिया से आंदोलन की शुरुआत हुई थी। वर्तमान में कुछ लोग ही कोरोना संक्रमण के कारण संपूर्ण लॉकडाउन का पालन करते हुए शाहजहाँनी पार्क भोपाल में नियमितीकरण हेतु बैठे हुए हैं। 4 माह से अधिक होने के कारण इनकी दशा बेहद दयनीय हो गई है। 90 प्रतिशत परिवारो का पालन इसी से होता था। कमलनाथ सरकार गिर जाने के कारण अतिथि विद्वान भर्ती भी नहीं हो पाई थी। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान इनके नियमितीकरण का समर्थन पहले कर चुके है, तथा अंतिम साँस तक साथ देने का वचन 16 दिसंबर को दे चुके है। कई वरिष्ठ भाजपा नेता और प्रवक्ताओ ने भी इनका पक्ष लिया था। परंतु मंत्रिमंडल का गठन नही होने से इनका मामला अटका हुआ है। मंगलवार को इनके आंदोलन के 128 दिन पूरे हो गये,फिर भी यह अपने लक्ष्य से दूर है। आगे बच्चो की फीस और सामाजिक जिम्मेदारी आदि का डर इन्हें सता रहा है। शासकीय पीजी कॉलेज झाबुआ के फॉलेन आउट अतिथि विद्वान शंकर लाल खरवाडिया ने बताया कि, सीएम साहब को थोडी सी चिंता बेबस अतिथि विद्वानो की भी करनी चाहिए, उनका परिवार इस दोहरे संकट से कैसे गुजर रहा होगा।

स्थापना दिवस पर पं. दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कोरोना भगाने का संकल्प लिया

माही की गूंज, झाबुआ। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य पूर्व जिलाध्यक्ष अंत्योदय समिति के पूर्व उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ भाजपा नेता दौलत भावसार भाजपा के वरिष्ठ नगर के पदाधिकारी मनीष त्रिवेदी स्वदेश परिवार के सदस्य ने दीनदयाल चौराहे पर पहुचकर भाजपा स्थापना दिवस के अवसर पर दीनदयालजी की प्रतिमा का सेनेटाइजर करवाया उसके बाद उन्हे माल्यापर्ण कर पुष्पाजंलि अर्पित की। इस अवसर पर भावसार ने कहा कि केन्द्र व प्रदेश की सरकारे दीनदयालजी के आचार विचार व्यवहार ओर कार्यपद्धति को लेकर देश को विश्व गुरु बनाने की दिशा मे कार्यरत है। हम आज भाजपा के स्थापना दिवस के अवसर पर संकल्प लेते है कि दीनदयालजी के आदर्शो पर चलकर देश ओर विश्व मे चल रही विकराल महामारी कोरोना पर विजय प्राप्त करेगे इस अवसर पर भावसार ने कहा कि पंडित दीनदयालजी से आर्शीवाद की कामना की है कि देश को इस विकराल महामारी से हम मुक्त हो ओर हमारी विजय हो।

राजस्थान के कुशलगढ़ में 7 और कोरोना पॉजिटिव मिलने से थांदला प्रशासन अलर्ट

कोरोना के प्रति ग्रामीण भी हुए जागरूक, राजस्थान से आने वाले सभी रास्ते किए सील

माही की गूंज, थांदला। मुकेश भट्ट

राजस्थान के कुशलगढ़ कस्बे की निकटवर्ती सीमा से लगा है झाबुआ जिले का थांदला नगर। जाहिर है इस तहसील के अनेक गांव व कस्बों की सीमाएं भी इससे जुड़ी हुई है। विगत 4 अप्रैल को कुशलगढ़ नगर में कोरोना के दो पॉजिटिव मरीज (पिता-पुत्र) के मिले थे व मंगलवार को 7 और नए मरीजों की पुष्टि होने से कुशलगढ़ के साथ थांदला में भी भय का माहौल बन गया है। नगर में इस बात को लेकर आशंका के बादल घिरे हुए है कि कुछ लोग कुशलगढ़ गए हो। जिसके संपर्क में आने के बाद कहीं थांदला में कोरोना संदिग्ध मरीज न निकल जाए। शासन ने राजस्थान सीमा से जिले में किसी भी तरह के प्रवेश पर पाबंदी लगा रखी है। इसी को लेकर झाबुआ व बांसवाड़ा जिला पुलिस अधीक्षक स्थानीय एसडीओपी व थाना प्रभारी के साथ राजस्थान-मध्यप्रदेश सीमा को देख चुके है।

सभी रास्ते प्रशासन ने किए सील

हालांकि कुशलगढ़ में अब तक 9 कोरोना पॉजिटिव के मिलने की खबर से आसपास भय का वातावरण निर्मित हो गया है। जिसे देखते हुए स्थानीय प्रशासन जो पूर्व में ही सतर्क हो गया था फिर भी क्षेत्र के एसडीएम जेएस बघेल, एसडीओपी मनोहर गवली व जनपद सीईओ आरसी हालू ने तत्काल सतर्कता बरतते हुए दोनों प्रदेशों के सीमा स्थल टिमरवानी के भेरूघाट मार्ग को सील कर पर्याप्त पुलिस बल लगा दिया। कुशलगढ़ ने पुलिस मित्र के 10 युवाओं भी वहां लगा दिया है।

राजस्थान से लगे सभी रास्तों को किया सील

मुख्य मार्ग बंद करने के पश्चात ग्रामीणों की सहायता से थांदला नगर के निकट ही काकनवानी थाना क्षेत्र के बालवासा तक व दूसरी ओर टिमरवानी से लेकर खवासा चौकी के परवाड़ा गांव से राजस्थान से लगे अनेक गावों की सीमाओं तक आवागमन के अनेक कच्चे, पक्के व पगडंडी के रास्तों, जहां से क्षेत्र की सीमा में प्रवेश किया जा सकता है, उन्हें भी सील कर दिया गया। वहीं ग्रामवासियों ने सतर्कता के साथ टिमरवानी, खांदन, दौलतपुरा, रूपगढ़, झोसली, वट्ठा, बालवासा के साथ आंगलियापाड़ा, बेड़ावा, मादलदा से लेकर परवाड़ा तक अनेक माध्यमों से रास्ते भी बंद कर दिए गए है। साथ ही वहां के ग्रामीणों को भी सचेत कर दिया है। राजस्थान के सभी मार्गो को बंद कर उन पर पूरे समय नजर भी रखने के लिए पुलिस जवान, कोटवार व ग्रामीणों का सहारा लिया गया है

अंचल में धूमधाम से मनी श्री राम नवमी

शासन निर्देशों का पालन करते हुए मंदिरों पर हुई जन्मोत्सव आरती

माही की गूंज, थांदला।

संपूर्ण अंचल में श्री राम जन्मोत्सव रामनवमी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर अंचल के विभिन्न प्राचीन मंदिरों श्री बड़े रामजी मंदिर, पट्टाभीराम मंदिर, नर नारायण मंदिर ,सांवरिया सेठ मंदिर, रणछोड़राय मंदिर, तेजाजी मंदिर, हनुमान अष्ट मंदिर बावड़ी, रणछोड़राय मंदिर परवलिया, शंकर मंदिर काकनवानी, श्री राम मंदिर खवासा सहित विभिन्न देवालय में अपराहन ठीक 12 बजे घंटी, शंख, घड़ियाल बजने लगे। जहां पर भगवान की जन्मोत्सव महाआरती संपन्न हुई।

इस अवसर पर सोशल डिस्टेंसिंग के शासन निर्देशों का पूर्णता पालन किया गया। मंदिरों में चुनिंदा भक्तों के द्वारा राम जन्मोत्सव मनाया गया। बड़ी संख्या में नागरिकों के द्वारा जन्मोत्सव आरती हेतु मंदिर नहीं जाते हुए अपने-अपने घरों में भी आकर्षक साज-सज्जा एवं श्रृंगार कर भगवान के जन्मोत्सव में आरती उतारी गई। भगवान श्री राम जन्मोत्सव मनाया गया।

स्थानीय श्री बड़े राम जी मंदिर थांदला में महाआरती का लाइव प्रसारण करने हेतु विशेष व्यवस्था कल्पना फोटो स्टूडियो एवं झाबुआ लाइव के यूट्यूब चौनल के माध्यम से रितेश गुप्ता एवं हर्ष नागर द्वारा की गई थी। जिस पर 5000 लोगों ने भगवान श्री राम के जन्म उत्सव आरती को लाइव देखा, तो वही मंदिर पर भक्त आरती में उपस्थित रहे। इस दौरान मंदिर पर पुलिस बल भी तैनात रहा।

इस अवसर पर मंदिर में आरती पुजारी रोहित विठ्ठल दास बैरागी द्वारा उतारी गई एवं सकल सुमंगल विश्व कल्याण की कामना की गई। विभिन्न देवालय में सीमित संख्या होने के बावजूद भी भक्तगण राम जन्मोत्सव में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर मंदिरों में विशेष साज-सज्जा भी की गई थी। किसी भी स्थान पर अत्यधिक भीड़ एकत्रित नहीं देखी गई। पहली बार राम जन्मोत्सव के अवसर पर भगवान श्रीराम की परंपरागत रूप से निकलने वाली शोभायात्रा भी नहीं निकाली गई।

समाजसेवी बाफना ने दिए प्रधानमंत्री राहत कोष में 51 हजार रुपए

माही की गूंज, मेघनगर। औद्योगिक क्षेत्र की बाफना जिनिंग, मध्य प्रदेश कॉटन एसोसिएशन के प्रदेश उपाध्यक्ष विनोद बाफना ने मंगलवार को कोरोना वायरस के संक्रमण से निपटने के लिए प्रधानमंत्री राहत कोष में 51 हजार रुपए का चेक मेघनगर एसडीएम पराग जैन को अनुविभागीय कार्यालय में दिया। बाफना ने कहा कि स्व. बाऊजी रणजीत सिंह बाफना के पद चिन्हों पर चलते हुए सेवाभाव के साथ प्रधानमंत्री राहत कोष में 51 हजार रुपए का चेक दिया है।

नेचरल गोल्ड व पत्रकारों के संयुक्त प्रयास से भोजन पैकेट का वितरण

माही की गूंज, थांदला । कोरोना वायरस महामारी के कारण पूरा देश लॉक डाउन के चलते बंद है। जिस कारण से जो दिहाडी मजदूरों और गरीब परिवारों पर यह बड़ी विपदा का समय है। इस विपदा के समय समाजसेवी लोग प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इन लोगों की मदद कर रहे हैं। थांदला नगर के अंतर्गत कुछ सामाजिक संगठनों के साथ-साथ युवा वर्गों की टीम भी उन लोगों के भोजन हेतु राशन की आवश्यकताओं की निःशुल्क आपूर्ति कर रही है। थांदला नगर के पत्रकारों और युवाओं की यह टीम उन लोगों के व्यवस्था में मदद करती हैं, जिन्हें वास्तव में भोजन की आवश्यकता हो। यह टीम भोजन के साथ-साथ उनकी चिकित्सा में भी मदद कर रही है। जिनके कार्यों की हर वर्ग में प्रशंसा हो रही है। टीम के अंतर्गत पत्रकार सुधीर शर्मा, राजेश डामोर, मनोज उपाध्याय, कादर शेख, समकित तलेरा, चंदू प्रेमी, आत्माराम शर्मा, अविनाश गिरी, कुंतल डाबी, राजेश वैद्य, विक्रम सिंघाड़, , कमलेश सोनी, जितेंद्र घोड़ावत, शांतिलाल पडियार आदि युवा सदस्यों द्वारा इस नेक कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं। यह सदस्य समय सारणी के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 4 के बीच जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क भोजन नेचरल गोल्ड कैम्पस पर तथा राशन सामग्री घर पहुंच सेवा दे रहे हैं ।

इस सेवा कार्य हेतु नेचरल गोल्ड के अली सेठ, रवि भाई, विपिन नागर,श्रेणिक गादिया, संजय व्होरा, प्रदीप गादिया सहित फैक्ट्री कर्मचारियों तन-मन-धन से सेवा कार्य में लगे है।

हनुमान जन्मोत्सव पर किया आकर्षक श्रृंगार

माही की गूंज, खच्चरटोडी। हनुमान जंयती के अवसर पर खच्चरटोडी हनुमान मंदिर पर हनुमानजी की मूर्ति की आकर्षक साज सज्जा की गई। कुछ भक्तों ने मंदिर में सोशल डिस्टेंसिंग को ध्यान में रखते हुए सुंदरकाण्ड का आयोजन भी किया। इस हनुमान मंदिर पर प्रतिवर्ष हनुमान जयंती पर भण्डारे का आयोजन होता है, लेकिन इस वर्ष कोरोना वायरस के कारण इसे स्थगित कर दिया गया। जिसके बदले प्रसाद के पैकेट बना कर गांव मे बांटे गए। कोरोना वायरस के कारण लॉकडाउन है, ऐसे में बजरंग बली के भक्तो ने घर मे आराधना की।

कोरोना के अंधेरे को दूर करने रोशन हुआ गांव

माही की गूंज, खच्चरटोडी। कोरोना वायरस के खिलाफएकजुटता का संदेश देने के लिए खच्चरटोडी के ग्रामीणों ने रविवार रात 9 बजे से 9 मिनट तक घर की लाइट बंद रखीं। दीये, मोमबत्ती, टॉर्च या मोबाइल फोन की फ्लैशलाइट जलाकर रोशनी की। इस दौरान 9 मिनट तक नजारा दीपावली जैसा था। रविवार रात 9 बजे लोगों ने प्रधानमंत्री की अपील को साकार कर दिखाया और कोरोना वॉरियर्स को पूरा समर्थन दिया। कोरोना के अंधेरे को दूर करने के लिए सभी एकजुटता का संदेश देते रहे।

नप में कोरोना से नगर को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक बैठक हुई

माही की गूंज, थांदला।

नगर परिषद अध्यक्ष बंटी डामोर की अध्यक्षता में मेडिकल ऑफिसर मनीष दुबे, एसडीओपी पुलिस एमएस गवली, भाजपा नेता विश्वास सोनी, नगर परिषद उपाध्यक्ष मनीष बघेल की उपस्थिति में कोरोना वायरस से थांदला को सुरक्षित रखने के लिए एक अति आवश्यक बैठक आयोजित की गई। सोशल डिस्टेंशिंग का पालन करते हुए डॉक्टर मनीष दुबे ने कई आवश्यक सुझाव दिए। एसडीओपी ने नगर की पुलिस व्यवस्थाओं के साथ अन्य जानकारी भी साझा की। इस संदर्भ में नगर परिषद की कार्यसमिति ने अपने सुझाव भी दिए। वहीं नगर के आसपास में कोरोना वायरस के सन्दर्भ में संदिग्ध व उनके संक्रमण से बचाव के लिये कदम उठाने पर सहमति बनी। सभी वार्ड पार्षद अपने-अपने वार्ड में नगर परिषद कर्मचारी के साथ मिलकर नगर के हर घरों की जानकारी लेंगे। जिसमें विगत 15 दिवस में उनके बाहर जाने की जानकारी व उनके यहां बाहर से यदि कोई आया या ठहरा हुआ है, उनकी भी जानकारी अनिवार्य रूप से देंगे। साथ ही आने वाले समय भी सावधानी रखने का निर्णय भी लिया गया।

कालाबाजारी रोकने के लिये लिया अहम फैसला

नगर परिषद बैठक में नगर में अवसरवादियों के द्वारा अमानवीय कालाबाजारी रोकने के लिये अहम निर्णय लिया गया। जिसके अंतर्गत जो किराना और सब्जी व्यापारी भाव सूची को सार्वजनिक करेगा, उसे ही अपनी वस्तु बेचने का अधिकार रहेगा। वहीं कालाबाजारी करने वालों के खिलाफ वैधानिक कार्यवाही करते हुए उनके खिलाफएफआईआर भी दर्ज की जाएगी। इसके लिए कोई भी व्यक्ति थांदला एसडीओपी को कालाबाजारी के लिये आवेदन करें। पूरी गोपनीयता के आधार पर प्रशासन कार्यवाही करेगा। बैठक में नेता प्रतिपक्ष लक्ष्मण राठौड़, वार्ड पार्षद गजेंद्र चौहान, समर्थ उपाध्याय, रोहित वैरागी, आनन्द चौहान, विकास रावत, कमालुद्दीन, स्वच्छता निरीक्षक गौरांकसिंह राठौर, सुरवाइजर यशदीप अरोड़ा, नीलेश नागर, गौरव चौहान आदि उपस्थित थे।

ऑनलाईन बिल भरकर 5 से 20 रूपये तक की छूट का होगा फायदा

माही की गूंज, झाबुआ। घरेलू उपभोक्ताओं को 24 घंटे बिजली प्रदाय करने वाली मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत विकास कंपनी ने ऑनलाईन, केशलेस तरीके से बिजली बिल भुगतान की अपील की है। घरेलू उपभोक्ताओं को घर से बिल अदा करने पर 5 से 20 रूपये तक की छूट भी मिलेगी।

झाबुआ के सहायक यंत्री उमाशंकर पाटीदार ने बताया कि उपभोक्ताओ के मोबाईल पर पैमेंट लिंक भी भेजी जा रही है। साथ ही मप्रपक्षेविविकं के उर्जस एप के होम पेज पर दाई ओर पे यूअर बिल के आप्शन पर जाकर बिल भरा जा सकता है। साथ ही मप्रपक्षेविविकं पोर्टल के भी दाई ओर बिल पैमेंट आप्शन की मदद से कैशलेंस बिल भरे जा सकते है। शहर सहित जिले मे कुल 13 वितरण केन्द्रो के अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा उपभोक्ताओं को कैशलेस सेवा का उपयोग कर ऑनलाईन के माध्यम से बिल भरने के लिए लगभग 97 व्हाट्स एप ग्रुप के द्वारा सुचित किया जा रहा है व कैशलेस तरीके से बिल भरने की अपील की जा रही है।

डॉ. चंचल की कविता तमिल में भी

माही की गूंज, झाबुआ।

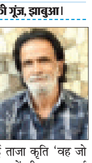

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. रामशंकर चंचल की कुछ दिनों पूर्व में विमोचित हुई ताजा कृति 'वह जो साथ है' तमिल में भी अनुवाद हुई है। इसका अनुवाद तमिल के हिंदी प्रेमी प्रचारक यश अनंतकृष्णन द्वारा अनुवाद किया गया। डॉ. चंचल का कहना है कि यह हर्ष का विषय है कि 4 दिन पूर्व विमोचित हुई उनकी ताजा कृति की रचना का तमिल में अनुवाद हुआ। अभी तक डॉक्टर राम शंकर चंचल की तमिल में अनुवादित 10-12 कविताएं हो चुकी है। तमिल के अतिरिक्त भी अनेक भाषाओं में उनकी कविताओं का अनुवाद हो चुका है। झाबुआ जैसे वनांचल में रहने वाले साहित्यकार डॉक्टर चंचल की कविताएं इतनी चर्चित व लोकप्रिय रहती है कि उनका तमिल ,गुजराती, सिंधी,मराठी, भीली आदि भाषाओं में आए दिन अनुवाद होता है ।

कोरोना वायरस नियंत्रण बैठक में शामिल हुए जनप्रतिनिधि और धर्मगुरू

माही की गूंज, मेघनगर। संपूर्ण लॉकडाउन के चलते मेघनगर थाना परिसर में कोरोना वायरस नियंत्रण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में सभी समाज के धर्मगुरु, विधायक वीर सिंह भूरिया, एसडीएम पराग जैन, तहसीलदार शक्ति सिंह, बीएमओ डॉ सेलक्षी वर्मा, एसडीओपी एमएस गवली, थाना प्रभारी श्रीमती कौशल्या चौहान, जनपद सीईओ वीरेन्द्र सिंह रावत, नगर परिषद मुख्य कार्यपालन अधिकारी विकास डावर सहित समाज प्रमुख और पत्रकार उपस्थित हुए। बैठक में सोशल डिस्टेंसिंग का विशेष ध्यान रखते हुए नियम के हिसाब से कुर्सियां लगाई गई। नियंत्रण बैठक में उपस्थित शासन-प्रशासन एवं समाजजनों की ओर से अपने - अपने विचार व्यक्त किए। धर्म गुरुओं ने अपील की कि अपने मंदिर,मस्जिद, गुरुद्वारा एवं गिरजाघर में ना आकर घर में ही अपने प्रभु को याद किया जाए। साथ ही प्रधानमंत्री मोदी द्वारा की गई 5 अप्रैल रात्रि 9 बजे की अपील में घर में दीपक व टॉर्च लाइट या मोमबत्ती जलाने पर सभी धर्मगुरुओं ने सोशल डिस्टेंसिंग व अपने घर के गेट व बालकनी में अपील को अमल करने की सलाह दी। समस्त धर्मगुरुओं ने यह भी कहा कि हम अपने माध्यम से पुरजोर कोशिश करेंगे कि हर व्यक्ति विशेष कोरोना वायरस जैसी भयंकर वैश्विक महामारी को समझे और अपने घरों में ही रहे। इस अवसर पर प्रशासन के अधिकारियों ने भी कोरोनावायरस रोकथाम के संबंध में उपयुक्त सुझाव दिए। नियंत्रण बैठक में विधायक वीर सिंह भूरिया ने संपूर्ण लॉकडाऊन को देखते हुए तथा शासन प्रशासन के नियमों का गंभीरता एवं कड़ाई से पालन करने की सलाह दी। वैवाहिक कार्यक्रम निरस्त करने की बात ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाना व इस भयानक महामारी व संकट की घड़ी में नगर के समाजसेवियों द्वारा मानवता का परिचय देते हुए जरूरतमंदों को भोजन वितरित किया जाए इस बारे में चर्चा की गई।

पुलिस विभाग ने आजाद चौक पर गुनगुनाएं गीत

लोगो ने छतों से खड़े रहकर जमकर बजाई तालियां

माही की गूंज, झाबुआ।

''इक प्यार का नगमा है, हम सबने ये ठाना है, मिल के अब कोरोना को हराना है 3. घर में ही रहना है, बाहर नहीं जाना है, खुद की रक्षा करके ओरो को बचाना है 3. जैसे तरन्नुम गाकर, जिले के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विजय डावर, पुलिस अधीक्षक कार्यालय के लेखापाल प्रकाष चौहान ने शहर के मध्य आजाद चौक पर खड़े होकर जिले की जनता के लिए संदेष दिया कि कोरोना जेसी वैष्विक महामारी को हम सभी को जागरूकता का परिचय देकर मिटाना है, घरों में रहकर अपने स्वयं तथा दूसरों की भी रक्षा करना है। पुलिस के इन गीतों पर आजाद चौक के निवासियों ने अपने घरा की छतों पर खड़े रहकर भारत माता और वंदे मातरम् के साथ जमकर तालियां भी बजाई।

पुलिस प्रशासन की ओर से यह कार्यक्रम 6 अप्रेल, सोमवार शाम 5.30 बजे से शहर के मध्य आजाद चौक पर रखा गया। पुलिस प्रशासन की ओर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विजय डावर एवं पुलिस अधीक्षक कार्यालय के लेखापाल प्रकाष चौहान ने तरन्नुम बांधते हुए कोरोना से जंग हेतु ''इक प्यार का नगमा है, हम सबने ये ठाना है, मिल के अब हमको कोरोना को हराना है, इक प्यार का नगमा है, हम सबने ये ठाना है, मिल के, अब हमको कोरोना को हराना है, इक प्यार का नगमा है, के साथ ही घर ही रहना है, बाहर नहीं जाना है, खुद की रक्षा करके ओरो को भी बचाना है, सेनेटाईजर लगाना है, हाथ धोते ही जाना है, मिल के 3 अब हमको कोरोना को हराना है, इक प्यार का नगमा है 3, के अतिरिक्त जनता कर्फ्यू का पालन भी हमे करना है, सोष्यल डिस्टेंस को भी बनाकर रखना है, मुंह पे मास्क लगाना है, हाथ में गलब्ज पहनना है, मिल के अब हमकों कोरोना को हराना हे 3. इक प्यार का नगमा है 3. जैसे गीत गाएं।

गूंजे भारत और वंदे मातरम् के जयघोष

पुलिस के इन गीतों पर आजाद चौक एवं आसपास के रहवासियों ने अपनी घरों की छतों पर ही खड़े रहकर भारत माता, वंदे मातरम् के सामूहिक जयघोष लगाते हुए माहौल में जोष भरा। तो कुछ युवाओं ने छतों से जमकर तालियां भी बजाई। इस दौरान अतिरिक्त पुलिस कप्तान श्री डावर ने मीडिया के माध्यम से जिले की जनता को संदेष देते हुए कहा कि सभी लोग संपूर्ण लॉकडाउन के नियमों का पूर्णतः पालन करे, अपने घरों से अनावष्यक बाहर नहीं निकले, पुलिस एवं प्रशासन को पूर्ण सहयोग प्रदान करे। झाबुआ जिले की लिए अभी तक सुखद खबर है कि हमारे यहां कोरोना से संक्रमित एक भी मरीज की पुष्टि नहीं हुई, यह आप सभी जिलेवासियों की समझदारी और घरों पर रहने के चलते ही संभव हो पा रहा है। आगामी दिनों में आप अपने एवं दूसरे को भी सुरक्षित और स्वस्थ रखने के लिए संपूर्ण लॉक डाउन का पूर्णतः पालन करे। जय हिन्द जय भारत !

आजाद चौक पर पुलिस ने दी प्रस्तुति।

यह रहे उपस्थित

इस अवसर पर सोशल डिस्टेनसिंग के साथ झाबुआ थाना प्रभारी सुरेन्द्रसिंह गाडरिया, आरक्षक चन्द्रभानसिंह जाट, यातायात पुलिस के एसआई लोकेन्द्रसिंह खेड़े सहित अन्य पुलिस अधिकारी-कर्मचारी मौजूद थे।

गांव में पहुंचकर लोगों को सेवा दे रहे हैं स्वास्थ्यकर्मी

माही की गूंज, सारंगी। करोना से निपटने के लिए प्रशासन व स्वास्थ्य विभाग मुस्तैदी से कार्य कर रहे हैं। पेटलावद बीएमओ एमएल चोपड़ा के आदेश पर सारंगी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के अंतर्गत उप स्वास्थ्य केंद्र के सभी स्वास्थ्य कर्मचारी अपनी सेवाएं फील्ड में दे रहे हैं तथा लोगों को समझाइश भी दे रहे हैं। क्षेत्र में कर्मचारी अपनी ड्यूटी ईमानदारी से निभा रहे हैं। बाहर से आए हुए लोगों की जांच की जा रही है। उन पर नजर रखी जा रही है। वहीं कर्मचारी द्वारा लोगों को दूरी बनाए रखने का महत्त्व बता रहे हैं। संक्रमण से बचाव के लिए ग्राम बैंगन बड़ी में एएनएम निशा बंसल ने टीकाकरण कार्य किया। वहीं गर्भवती माताओं को भी टीकाकरण के बाद लोगों को कोरोना वायरस से बचाव के लिए समझाइश दी। यही काम सभी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा पूरे क्षेत्र में किया जा रहा है। साथ ही आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और आशा कार्यकर्ता भी फील्ड में अपनी सेवाएं दे रही है तथा गांव के लोगों को समझाइश दे रही है।

मोंहि न कछु बाँधे कई लाजा

वीरेन्द्र सिंह परिहार, लेखक

भारतीय परंपरा एवं वाङ्मय में हनुमान एक अद्भुत व्यक्तित्व हैं, जिसका उदाहरण विश्व इतिहास में शायद ही कोई दूसरा हो। यूँ तो हनुमान सेवा -भाव के अप्रतिम उदाहरण माने जाते है, जैसा कि तुलसीदास ने लिखा है-÷सबसे सेवक धर्म कठोरा।' हनुमान बुद्धि, बल, चातुर्य और विवेक में भी अद्वितीय है। इतना ही नहीं, आधुनिक और वर्तमान संदर्भों में भी वह निहायत ही प्रासंगिक हैं। उनके बुद्धि और विवेक के उदाहरण के लिए वह प्रसंग अन्यन्त महत्वूपर्ण है, जब वह सीता को ढूंढने के लिए लंका में प्रवेश करते है। अचानक उन्हें विभीषण की उप0 का पता चलता है। वह सोचते हैं कि सीता की खोज के संदर्भ में विभीषण से चर्चा की जाए या न की जाए।पर अन्त में वह अपने बुद्धि-विवेक से विभीषण से मिलने का फैसला करते हैं, और इसका कारण वह यह बताते हैं-

'एहि सन हठ करिहऊ पहचानी,
साधु ते होई न कारज हानी।'

कहने का मतलब यह कि हनुमान जी तय करते हैं कि विभीषण से किसी भी कीमत पर जान-पहचान बनानी है। यदि इससे मेरा कुछ काम नहीं भी बना तो इसमें कुछ नुकसान होने वाला भी नहीं है। क्योकि साधु, अथवा सज्जन से किसी प्रकार के हानि का आशंका नहीं होती। कहने का आशय यह कि यदि सज्जन व्यक्ति किसी कारणवश किसी की मदद भले न कर पाए पर वह कम-से-कम किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएगा। इस तरह से हनुमान जी को मानवीय प्रवृत्तियों का ही नहीं, बल्कि मनोविज्ञान की भी बेहतर समझ है।

जहां तक सेवक-धर्म की बात है, तो वह तो इसके साक्षात स्वरूप है। लेकिन उन्हे यह भी पता है कि सेवक की पहली शर्त यह है कि वह अंहकार रहित हो और मान-अपमान से सर्वथा असम्पकृत हो। इसी को दृष्टिगत रखते हुए जब मेघनाद नागपाश में बांधकर हनुमान को लंका के राज दरबार में रावण के समक्ष प्रस्तुत करता है। तब हनुमान जी कहते है -

'मोंहि न कछु बाँधे कई लाजा।
कीन्ह चहौ निज प्रभु कर काजा।'

यानी हनुमान जी का कहना है कि मुझे बांधे जाने को लेकर कोई लज्जा या बेइज्जती जैसी कुछ महसूस नहीं हो रहा है, मेरा लक्ष्य तो अपने स्वामी श्री राम जी का कार्य करना मात्र है। वस्तुतरू हनुमान जी की उपरोक्त सोंच आधुनिक संदर्भो में निहायत ही प्रासंगिक है। इसका आशय यह है कि हनुमान जी का अपना कोई निजी एजेण्डा तो दूर-दूर तक नहीं है।

उनका एकमात्र लक्ष्य श्री राम का कार्य सिद्ध करना है। अब जहां तक श्री राम का सवाल है तो यह बताने की कोई जरूरत नही है कि श्री राम कोई एक व्यक्ति मात्र नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों के पर्याय है। जैसा कि प्रसिद्ध संत श्री मुरारी बापू का कहना है - 'राम यानी राष्ट्र।' कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि श्री राम राष्ट्र के पर्याय है। इस तरह से हनुमान जी का एकमेव लक्ष्य राष्ट्र एवं यह वृहत्तर समाज है। निश्चित रूप से हनुमान जी का उपरोक्त दृष्टिकोण सिर्फ सार्वजनिक जीवन में काम करने वालों के लिए नही, सामाजिक कार्यकर्ताओ के लिए ही नहीं, बल्कि आम जन के लिए भी एक दीप-स्तंभ की भाँति है। क्योकि अक्सर देखने में यह आता है कि आम जन की बात तो अपनी जगह पर है, अपने को सामाजिक कार्यकर्ता कहने वाले भी निजी मान-सम्मान के प्रति बहुत सचेत रहते है। वह ऐसे लोगों से जो समाज-विरोधी कहे जा सकते है या कि उदण्ड किस्म है अथवा दादा एवं गुण्डा किस्म के लोग है। उनसे इसलिए बचते या कटते रहते है कि कहीं उनकी बेइज्जती न हो जाए। यही वजह है कि ऐसे असामाजिक तत्व अपनी मनमानी ही नहीं करते रहते, समाज जीवन से खिलवाड़ भी करते रहते हैं, क्योकि उनका प्रतिरोध करना तो दूर उन्हे कोई टोंकने का भी साहस नहीं करता। कारण यही आशंका कि इससे मुझे अपमानित होना पड़ेगा, झंझटे एवं परेशानी उठानी पड़ेगी, पर हनुमान जी के अनुसार यदि हमारा लक्ष्य सेवा है, तो ऐसे लोगो का प्रतिरोध कहीं-न-कहीं करना पड़ेगा। ऐसे लोगों को टोंकना और रोकना पड़ेगा, भले ही उसका नतीजा जो हो, इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम आत्म-सम्मान शून्य हो जाएं। मतलब सिर्फ इतना है कि निजी जीवन या निजी संबंधों की बात अलग है, पर सामाजिक जीवन या वृहत्तर संदर्भो में निजी मान-सम्मान नहीं, लक्ष्य महत्वपूर्ण है। तभी तो सभी मान-सम्मान को परे रखकर अपमानित होकर भी वह रावण जैसे महाशक्तिशाली का प्रतिरोध कर रहे है। उसे एहसास करा रहे है कि वह गलत कृत्य कर रहा है। मर्यादा का उल्लंघन कर रहा है, जो कि निंदनीय एवं दण्डनीय कृत्य है। संत कबीर भी कुछ इसी अंदाज में कहते है -'परमारथ के कारणें मोंहि न लागै लाज।' कहने का आशय यह कि जहां जनहित का प्रश्न है वहां किसी तरह की लाज, शर्म, मान-अपमान का सवाल ही नहीं उठता। गीता के कृष्ण ने ऐसे ही व्यक्ति को योगी कहा है। सच्चे अर्थो में यदि इस दिशा में आम जन और खास तौर पर सामाजिक कार्यकर्ता जों अपने के समाज का सेवक कहते है, और मानते हैं। इस दिशा में हनुमान जी का अनुकरण कर सके-तो सिर्फहमारे समाज जीवन की ही नहीं, राष्ट्र-जीवन की बहुत सारी व्याधियों से भी छुटकारा मिल सकता है। पर इसका एक ही रास्ता है, ताकतवर व्यक्ति यदि बुरा है, तो हम उसे बुरा कहने का साहस जुटा सके। पर बिडम्बना यह है कि समाज में बहुत से ऐसे लोग है, जिन्हें सिर्फअपने सम्मान की चिंता रहती है, और इसके लिए वह ताकतवार लोगों के गलत कार्यो की भी लल्लो-चप्पो करते रहते हैं, जो हमारे समाज जीवन का बड़ा संकट है। हनुमान एक ऐसे व्यक्तित्व है, जो सच्चाई के लिए पूरी तरह समर्पित तो हैं-ही, दूसरी ओर गलत लोगों के विरूद्ध पूरी ताकत से खड़े भी है।

सवाल पूछे ही नहीं जा रहे है, जवाब मिलते जा रहे है

श्रवण गर्ग, वरिष्ठ पत्रकार

हवा का रुख़ देखकर लगता है कि लोगों की बेचौनी बढ़ रही है, वे पहले के मुकाबले ज्यादा नाराज होने लगे हैं और अकेलेपन से घबराकर बाहर कहीं टूट पड़ने के लिए छटपटा रहे हैं।मनोवैज्ञानिक आगाह भी कर चुके हैं कि ऐसी स्थितियों में 'डिप्रेशन' के मामलों में भी काफी वृद्धि हो जाती है।इनमें घरों में बंद लोगों के साथ-साथ खुली सड़कों पर अपने को और ज्यादा अकेला और असहाय महसूस करने वाले हजारों-लाखों बेरोजगार और मजदूर भी शामिल किए जा सकते हैं।हमारे लिए ऐसा और इतना लम्बा एकांतवास पहला अनुभव है ,कम से कम उस पीढ़ी के लिए जो पिछले बीस वर्षों में बड़ी हुई है।पिछले बीस वर्षों में भी देश को कोई ऐसा युद्ध नहीं लड़ना पड़ा है जिसमें किसी ज्ञात या अज्ञात शत्रु से युद्ध के लिए अपने को घरों में क़ैद करना पड़ा हो।चीन के साथ हुए युद्ध की हमें तो याद है पर उसे भी हुए अब साठ साल होने आए।

जैसे-जैसे बैसाखी और अम्बेडकर जयंती नजदीक आ रही है ,सरकार की चिंता कोरोना से ज्यादा लॉक डाउन से आजाद होकर सड़कों पर टूट पड़ने को बेताब भीड़ से निपटने को लेकर बढ़ सकती है।

ईमानदारी की बात तो यह है कि कोरोना के फ्रैक्चर से चढ़ा पट्टा कब और कैसे काटा जाएगा इस पर बड़े डॉक्टर मौन हैं।महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने जरूर संकेत दे दिया है कि 14 अप्रैल के बाद लॉक डाउन की समाप्ति जनता द्वारा सरकार के निर्देशों का पालन करने पर निर्भर करेगी।स्मरण किया जा सकता है कि मुख्यमंत्रियों से हुई वीडियो कॉंफ्रेंसिंग के बाद प्रधानमंत्री की ओर से सबसे ज्यादा तारीफठाकरे की तरफसे आए सुझावों की की गई थी।उद्धव के सुझावों को व्यापक संदर्भों में भी पढ़ा जा सकता है कि पट्टा काटने के बाद केवल बैसाखियों पर टहलने की ही छूट दी जा सकती है।

इस बात का पता चलना शेष है कि कम से कम उन मुख्यमंत्रियों की ही ओर से जो सोनिया गांधी का 'ही कहा' या 'कहा भी' मानते हैं केंद्र को कठघरे में खड़ा करने या विचलित करने वाला ऐसा एक भी सवाल प्रधानमंत्री या उनके साथ बैठे लोगों से पूछा गया हो जिसका कि जवाब उनके राज्य की जनता मांग रही है।पत्रकारों की तरह दबी जुबान में ही सही पूछा जा सकता था कि क्या स्थिति नियंत्रण में है और सामान्य की तरफलौट रही है ?ख़स्ता वित्तीय हालात किस तरह संभलने वाली है ?फसलें खड़ी है,मजदूर गायब हैं।इस बात पर केवल खेद ही व्यक्त किया जा सकता है कि जिन सवालों के जवाब माँगे जाने चाहिए उन्हें कोई पूछने की हिम्मत भी नहीं कर रहा है ,विपक्ष भी नहीं।और जो कुछ कभी पूछा ही नहीं गया उसके जवाब हर तरफसे प्राप्त हो रहे हैं।इस बीच भूलना नहीं है कि आज रात नौ बजे नौ मिनट के लिए बिना बेचौन हुए हम सबको क्या करना है।

दीयों की रोशनी से जगमगया थांदला, दिया एकता का संदेश

माही की गूंज, थांदला।

विश्वभर में कोरोना वाइरस से हाहाकार मची हुई है। कोरोना वाइरस (कोविड-19) के संक्रमक से भारत भी गुजर रहा है। इसके चलते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 5 अप्रैल रविवार रात 9 बजकर 9 मिनिट तक पूरे देश के लोगों से अपने अपने घर के दरवाजे या बालकनी में दीपक, मोमबत्ती या मोबाईल की फ्लैशलाइट जलाने की अपील की गई थी। जिसमें पीएम मोदी की इस अपील को मानते हुए लोगों ने अपने अपने घरों की बालकनी और घर के दरवाजे पर दीपक और मोमबत्ती जला कर 9 मिनिट तक कोरोना की लड़ाई में एक साथ एकता व अखंडता के साथ खड़े होने का परिचय दिया। जैसे ही लोगों ने अपने अपने घरों के बाहर हजारों दीपक की रोशनी जलाई। मंदिरों में भी असंख्य दीपक प्रज्वलित किए गए। दीयों की रोशनी से थांदला शहर में दीपावली-सा आभास होने लगा। पूरा 9 मिनिट के नगर एक समय के लिए शांत हो गया। सभी लोगों के जहन में बस एक ही बात की चहल कदमी कर रही थी। सभी ने लोग अपने आराध्य देवों से इस कोरोना रूपी महामारी से निजात दिलाते हुए सभी प्राणी मात्र को बचाने के लिए प्रार्थना करते नजर आए। लोगों को एक साथ पीएम मोदी की इस एकता रूपी मुहिम से हर कोई प्रसन्नता महसूस कर रहा था। अंधकार से प्रकाश की ओर एकता और शांति की मिशाल देश में सदा इसी तरह जलती रहे।

देशभक्ति के माहौल के साथ जनता ने लगाए दीपक

माही की गूंज, झाबुआ । देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर संपूर्ण गनर में 05 अप्रैल रविवार को को रात्री 9 बजते ही समस्त जनता द्वारा अपने घरों के अंदर की लाइट बंद करके अपने घरों के बाहर दीपक, मोबाइल की लाइट, टॉर्च के साथ-साथ भारत माता की जय के नारे लगाएं। एक देशभक्ति का माहौल के साथ, हर नागरिक के मन में देशभक्ति का जज्बा था, तथा नगर की जनता ने बता दिया है, की हम सब कोरोना वायरस जैसी महामारी के निदान हेतु देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हैं। काफी उत्साह है, जनता को यकीन है कि बहुत जल्द कोरोना वायरस जैसी महामारी का निदान हो जाएगा। नागरिकों का कहना है कि हम सब देश के साथ हैं हम सब एक हैं। नगर की हर गली, हर चौराहे, हर मंदिरों में दिए लगाए गए, एक ऊर्जा का संचार हुआ। जनता ने अपने ईश्वर,अपने खुदा से प्रार्थना करी,कि हमारे भारत देश पर कभी भी कोई विपत्ति ना आए, देश में सुख शांति बनी रहे।

नापतौल, खाद्य एवं औषधि और नागरिक आपूर्ति विभाग की संयुक्त कार्यवाही

माही की गूंज, पेटलावद/रायपुरिया।

पेटलावद तहसील क्षेत्र में नापतौल, खाद्य एवं औषधि, नागरिक आपूर्ति विभाग की तीनों विभाग ने संयुक्त रूप से पेटलावद नगर में स्थित मेडिकल शॉप पर मास्क एवं सेनेटाइजर की उप्लब्धता एवं मूल्य को लेकर जांच की गई। वही रायपुरिया में अनाधिकृत रूप से एक दूध डेयरी खुली होने पर उसे सील किया गया।

नगर की राजश्री मेडिकल, सिटी मेडिकल स्टोर्स, महावीर मेडिकल स्टोर्स, विजय मेडिकल स्टोर्स एवं श्री नाकोड़ा मेडिकल स्टोर्स पर जांच दल पहुंचा। जहां मास्क एवं सेनेटाइजर की स्टॉक स्थिति प्राप्त की गई एवं उनकी उपलब्धता एवं कीमत को समक्ष में चस्पा करवाया गया। ड्रग इंस्पेक्टर कमल अहिरवार ने बताया कि सभी मेडिकल स्टोर्स को निर्देशित किया गया है कि भारत सरकार द्वारा निर्धारित कीमत पर ही विक्रय किया जाना सुनिश्चित करें तथा बताया कि दवाइयों को डॉक्टर के पर्चे पर एक बार में 15 दिवस से अधिक का डिस्पेंस न करें। ताकि दवाइयों की उपलब्धता सामान्य बनी रही एवं अतिआवश्यक श्रेणी की दवाईयों की कमी होने पर शासन को सूचित करें। इसके साथ ही हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन टेबलेट को भारत सरकार द्वारा ड्रग्स एंड कास्मेटिक रूल्स 1945 की शेड्यूल 'ग' में सम्मिलित किया गया है। इसे डॉक्टर की पर्ची पर ही विक्रय किया जाए तथा रिकॉर्ड संधारण किया जाए। नियम विरुद्ध विक्रय पाए जाने की स्थिति में सख्त कार्यवाही की जाएगी। वहीं खाद्य एवं औषधि प्रशासन के पंकज कुमार अंचल एवं राहुल सिंह अलावा द्वारा ग्राम रायपुरिया में भी कार्यवाही की जाकर लगभग दोपहर 2 बजे झाबुआ रोड स्थित दूध डेयरी खुली पाई जाने पर कार्यवाही की गई। जिसके द्वारा बिना पंजीयन के दूध, कोल्ड्रिंक्स एवं आइसक्रीम का विक्रय किया जा रहा था। जिसके चलते दुकान को आगामी आदेश तक सील किया गया है। खाद्य नागरिक आपूर्ति से आंनद चंगोड़, कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी खाद्य सुरक्षा अधिकारी पंकज कुमार अंचल, राहुल सिंह अलावा, ड्रग इंस्पेक्टर कमल अहिरवार एवं नापतौल विभाग से नापतौल निरीक्षक कपिल कदम एवं संजय पांचाल उपस्थिति रहे।

पुलिस विभाग द्वारा नगरवासियो से लॉक डाउन का पालन करने की कर रहे अपील

माही की गूंज, झाबुआ।

नगर में लॉक डाउन के 15 वे दिन सन्नाटा दिखाई दिया। जिसमें कुछ ईक्का दुक्का लोग ही सडको पर दिखाई दिये। वही पुलिस कर्मियो के द्वारा प्रतिदिन 24 घंटे ड्यूटी पर तैनात रहे। नगर के राजवाडा पर पुलिस के द्वारा सख्ती से लॉक डाउन का पालन करते हुये दिखाई दिये। वही नगर के हर मोहोल्ला में पुलिस वाहन के द्वारा घर से नही निकलने के निर्देशो का पालन करने का आव्हान किया। वही पुलिस द्वारा लोगो को समझाईश दी गई कि लोगो को घरेलु सामानो की जरूरते घर पर ही मिल रही है। वही सब्जी, फल आदि सामानो की व्यवस्था भी घर पहुच हो रही है। इसके लिये पुलिस विभाग के द्वारा नगर में सभी लोगो से यह अपील की है कि वे लॉक डाउन के चलते अपने अपने घरो में ही रहे। बिना वजह बाहर ना घूमे। बहुत ही ज्यादा ईमरजेन्सी हो तो ही घर से निकले अन्यथा ना निकले।

पुलिस विभाग के द्वारा नगर में लॉक डाउन के चलते हर चौराहो पर चौकसी की जा रही है। वही उनके द्वारा अपवादित तत्वो पर भी लगाम कसी जा रही है। इसके चलते विगत कई दिनो से लॉक डाउन के चलते नगर में अपवादित तत्व भी नगर में घूमते हुये दिखाई दे रहे है। जिन पर पुलिस द्वारा सख्ती से लॉक डाउन का पालन करने को कहा जा रहा है वही इन लोगो पर भी चौकसी की जा रही है। वही नगर में आने जाने वाले प्रत्येक वाहनो की सघनता से चेंकिंग की जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति से नगर में घूमने निकलने वालो से सख्ती से पूछताछ हो रही है। वही ईमरजेन्सी होने पर ही उन्हे छोडा जा रहा है नही होने पर उन पर सख्ती बरती जा रही है।

सभी जिलों में संपूर्ण लॉक डाउन सुनिश्चित किया जाएं - मुख्यमंत्री

माही की गूंज, झाबुआ। मप्र के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने प्रदेश सभी जिलों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से निर्देश दिए हैं कोरोना संक्रमण रोकने के लिए प्रदेश के कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक अपने-अपने जिलों में संपूर्ण लॉक डाउन सुनिश्चित करें। आदेशों का उल्लंघन करने वालों पर सख्त कार्रवाई हो। यदि कोई कोरोना संक्रमण को छुपाता है अथवा जांच में सहयोग नहीं करता है, तो यह गंभीर अपराध होगा। ऐसे लोगों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज करें और जेल भेजे। कार्य में लापरवाही करने वालों के विरुद्ध भी कार्रवाई की जाए।

मुख्यमंत्री चौहान ने कोरोना की स्थिति एवं इससे निपटने के लिए की जा रही व्यवस्थाओं की जिलेवार एवं संभागवार समीक्षा की तथा अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने रबी उपार्जन व्यवस्था की भी जिलेवार समीक्षा की। मुख्य सचिव इकबालसिंह बैंस ने संभागायुक्तों और जिला कलेक्टरों को निर्देश दिए कि टोटल लोक डाउन के दौरान आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति बनी रहनी चाहिए। साथ ही, सभी मालवाहक वाहन तथा उनके खाली वाहनों को भी न रोका जाए। ऑनलाइन सेवाएं देने वाले वस्तुओं के वाहनों को भी नहीं रोका जाए। लॉजिस्टिक वाहनों को केंद्रीकृत पास जाने की व्यवस्था भी की जा रही है।

लॉकडाउन का उल्लंघन करने वालों पर की जाए सख्ती से कार्रवाई

फसल कटाई जारी रहे

मुख्यमंत्री चौहान ने निर्देश दिए कि प्रत्येक जिले में किसानों को फसल कटाई की सुविधा दी जाएं। इसके लिए हार्वेस्टर, ट्रैक्टर आदि को ना रोका जाए तथा इनकी मरम्मत, सर्विसिंग आदि की भी व्यवस्था की जाए। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि किसानों को कृषि कार्य के लिए बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। यदि ट्रांसफार्मर खराब है, तो उसे तुरंत बदला जाए। बकाया बिल का भुगतान बाद में हो जाएगा। मुख्यमंत्री ने बताया कि शासन द्वारा जरूरतमंदों को भोजन एवं खाद्यान्न की पर्याप्त व्यवस्था प्रत्येक जिले में की गई है। इसके लिए हेल्प डेस्क और हेल्पलाइन नंबर 181 कार्य कर रही है। जिलों में कोई भी व्यक्ति भूखा न सोए। हेल्प लाइन नंबर पर भोजन प्राप्त करने वाले तथा भोजन देने वाले दोनों संपर्क कर सकते हैं।

इलाज के लिए मना न करें निजी अस्पताल

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि जिलों के निजी अस्पताल इलाज के लिए मना ना करे, अन्यथा उनके विरुद्ध कार्रवाई होगी। सरकारी अस्पताल को कोविड अस्पताल के रूप में चिन्हित करें। नागरिकों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक और यूनानी दवाओं का निः शुल्क वितरण किया जाए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने निर्देश दिए कि प्रत्येक जिले में जिला आपदा प्रबंधन समूह बनाए जाएं। कोरोना आपदा कार्य के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सेकंड लाइन तैयार की जाए। लोगों को मास्क लगाने के लिए प्रेरित किया जाए। होम मेड मास्क का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। कलेक्टर सुनिश्चित करे कि उनके जिले के हेल्प लाइन नंबर प्रभावी कार्य करें। उन्होंने कलेक्टर्स से कहा कि केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा विभिन्न शासकीय योजनाओं की राशि हितग्राहियों के बैंक खाते में ट्रांसफर कर दी गई है। बैंकों से यह राशि निकालने में हितग्राहियों को दिक्कत ना आएं, इस बात का पूरा ध्यान रखा जाए कि बैंकों में अनावश्यक भीड़ न लगे।

शासकीय-अर्धशासकीय कर्मचारियों को नही मिल पा रहा वेतन

माही की गूंज, झाबुआ। प्रदेश में संक्रमण की स्थिति को देखते हुए लाक डॉउन का समय बढ़ाया ज ा सकता हैं। जिले एवं प्रदेश में हजारों की संख्या में शासकीय अर्द्धशासकीय एवं अशासकीय कर्मचारी अपनी अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। जो अपनी तनखा से अपना घर गृहस्थी चला रहे है तथा कई सेवानिवृत्त कर्मचारी भी अपनी पेंशन से अपना घर चलाते हैं लॉक डाउन के कारण उन्हें अपना घर चलाने में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। जिला कांग्रेस अध्यक्ष निर्मल मेहता एवं प्रवक्ता हर्ष भट्ट ने प्रशासन एवं संबंधित विभागों से निवेदन किया है कि वे कर्मचारियों के खातों में तत्काल उनकी तनखा का पैसा डालने की प्रक्रिया प्रारंभ करें। कांग्रेस ने प्राइवेट संस्थाओं से भी निवेदन किया है कि वह भी अपने कर्मचारियों के खातों में जल्द से जल्द उनकी तनखा डालें।

संपूर्ण लॉक डाउन में सकल व्यापारी संघ प्रतिदिन जरूरतमंदों को बांट रहा भोजन पैकेट

किराना व्यापारियों को अब होंगे जिला प्रशासन से पास प्राप्त

माही की गूंज, झाबुआ। नगर में संपूर्ण लॉक डाउन के 15वें दिन भी नगर में सन्नाटा पसरा दिखाई दिया। सकल व्यापारी संघ द्वारा किराना होम डिलीवरी व किराना व्यवसाय को बुधवार 8 अप्रैल को दोहपर 1 बजे बाद बंद कर दिया गया। साथ ही सभी पास को एकत्रित कर उन्हें जिला प्रशासन को दे दिए गए। नगर में कुछ दिनों से पेम्पलेट एवं पास बना कर कई लोगों के द्वारा लॉक डाउन को उल्लंघन किया जा रहा था। जिससे की जिला पुलिस प्रशासन की ओर से सख्ती एवं संपूर्ण लॉक डाउन की स्थिति में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने के लिए यह कदम उठाए। जिसमें किराना व्यापारियों को जिला प्रशासन की ओर से ही पास दिए जाएंगे। जिसमें पास वाले ही किराना सामानों की होम डिलवरी नगर में दे सकेंगे।

सकल व्यापारी संघ के अध्यक्ष नीरज राठौर द्वारा बताया गया कि संपूर्ण लॉक डाउन के तहत 15 वे दिन बुधवार 8 मार्च को कुल 31 हजार 600 भोजन पैकेट जरूरतमंदों को वितरित किए गए।

पुलिस विभाग ने दिए सभी थानों में मास्क व सेनेटाईजर

विभाग के प्रत्येक परिजनों का घर-घर जाकर किया जा रहा परीक्षण

माही की गूंज, झाबुआ।

पुलिस अधीक्षक द्वारा बुधवार 8 अप्रैल को प्रेस कांम्फ्रेन्स कर बताया कि देश में कोरोना वायरस जैसे खतरनाक संक्रमण अपने पैर जमा रहा हैं वही दिन रात डॉक्टर, स्टाफनर्स, वार्ड बॉय, कम्पाउंडर के साथ ही जिला पुलिस प्रशासन एवं जिला शासन के द्वारा दिन रात इस संक्रमण को रोकने के लिये ड्यूटी कर रहे है। जिसके लिये जिले के प्रत्येक थानो में पुलिस कर्मचारियो को सेफ्टी के लिये मास्क, सेनेटाईजर, एप्रेन आदि सुविधाओं प्रदान की जा रही है। जो दिन रात ड्यूटी कर जनता की सुरक्षा के लिये तैनात रहते है उनके लिये इन सुविधाओ की सख्त जरूरत थी। इसमें लॉक डाउन की पूरी जिम्मेदारी पुलिस विभाग की होती है। इसके लिये उन्हे मास्क, सेनेटाईजर एवं हौम्योपैथिक एवं आयूर्वेट की दवाईयो का वितरण किया जायेगा। इसमें हमने पूर्व में भी मार्केट में सेनेटाईजर की उपलब्धता कम होने के कारण हमारे स्तर पर हमने पुलिस कर्मीयो को सेनेटाईजर दिया था। हमारे द्वारा 200 मिलीलीटर की करीब 900 बॉटल बनाई गई है। जिसे प्रत्येक थानो में पुलिस कर्मीयो को दिया जायेगा। वही थानो मे साफसफाई की ओर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। साथ ही नगर पालिका से सोडियम हाईपोक्लोराईड एवं स्प्रे मंगवाया गया है जिसका उपयोग हर थानो मे किया जायेगा। 14 तारिक तक लॉक डाउन के चलते पुलिस कर्मी को दिन रात तैनात रहना पडेगा। ताकि जब तक कोरोना वायरस का संक्रमण पूर्णतः खत्म नही हो जाता है। बाहर से भी लोग झाबुआ जिले मे वापस आ गये है। अपराधो की संख्या बढ सकती है। इसके लिये पुलिस को यह सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है।

पुलिसकर्मी के घर जाकर हो रहा स्वास्थ्य परीक्षण

पुलिस अधीक्षक विनित जैन द्वारा बताया गया कि भोपाल में कुछ पुलिस कर्मी पॉजीटीव पाये गये है। इसके लिये डीजीपी साहब द्वारा निर्देश दिये गये है कि प्रत्येक पुलिसकर्मी के घर घर जाकर उनका चेकअप करवाया जाये। नगर सहित जिले भर में पुलिस कर्मीयो के घर घर जाकर प्रत्येक उनके परिवार के हर एक व्यक्ति का स्वास्थ्य परीक्षण किया जा रहा है। वही उनके द्वारा समझाईश दी जा रही है कि यदि उन्हे किसी भी तरीके के स्वाथ्य में खराबी दिखाई देती है तो वे तुरंत ही अस्पताल जाकर अपना चेकअप करवाये। वही नगर के पुलिस लाईन में स्थित पुलिस विभाग के आरआई श्री मीना एवं डॉक्टर मिश्राजी द्वारा भी पुलिस विभगा के प्रत्येक घर पर जाकर उनके परिजनो का स्वाथ्य परीक्षण किया ओर इस संक्रमण से बचने के लिये सावधानियों के बारे में भी बताया।

पुलिस अधीक्षक विनित जैन प्रेसवार्ता में जानकारी देते हुये।08 झाबुआ फोटो-

पुलिस लाईन स्थित पुलिसकर्मीयो के घर घर जाकर कर रहे परीक्षण।

वन्य जीव का शिकार करते 6 को पकड़ा

वन विभाग की टीम ने की कार्यवाही

माही की गूंज, पेटलावद/बामनिया। इन दिनों जंगली जानवरों और वन्य जीवों के शिकार की खबरें लगातार मिल रही है। कोरोना के चलते लोग घरों में है, लेकिन इन मूक प्राणियों के शिकार के लिए कुछ लोग जंगल की ओर शिकार के लिए घूम रहे हैं। ऐसे ही कुछ शिकारियों को वन विभाग पेटलावद की टीम रंगे हाथ शिकार करते धरा हैं। मिली जानकारी के अनुसार बामनिया और करवड़ के बीच ग्राम गोदडिया-वारनवाला के पास माही नदी के पास वन्य जीव का शिकार करते हुए 6 युवकों को पकड़ा। इनसे विलुप्त प्रजाति के जीव पाम सिवट भी मिला। जिसका शिकार इनके द्वारा किया गया था। मुखबिर की सूचना पर वन विभाग पेटलावद ने कार्यवाही करते हुवे रवि पिता रामितनाथ, नीरू पिता सारट नाथ, विक्रम पिता कवरनाथ, अर्जुन भाटी, दिलीप पिता कालू नाथ को गिरफ्तार कर इनके खिलाफ वन्य प्राणी सरंक्षण अधिनियम 1972 की धारा 2,9,39 व 48 (।) 51 के तहत वन अपराध पंजीबद्ध किया है। पूरी कार्यवाही में बीड गार्ड विजयसिंह सोलंकी, धीरज गुर्जर, गोवर्धन सिंह, तारसिंह भाभर की सराहनीय भूमिका रही है।

पूर्व चौकीदार सहित दो को लकड़ियां काटते रंगे हाथों पकड़ा, प्रकरण दर्ज

माही की गूंज, थांदला। फॉरेस्ट विभाग द्वारा दौलतपुरा बीट में बीते लंबे समय से मकानों में जंगल की लकड़ियां काट कर रख रहे ग्रामीणों को रंगे हाथों पकड़ा। उन पर प्रकरण भी दर्ज किया गया। रेंज ऑफिसर पीएस नायक ने बताया कि बीते 1 महीने से कुछ ग्रामीणों पर रेंज निगाह बनाए रखे था। जिन्हें आज वन परिक्षेत्र थांदला अधिकारी रोहित चतुर्वेदी के मार्गदर्शन में रंगे हाथों पकड़ा गया। जिनसे दो ट्रैक्टर लकड़ियां बरामद की गई। जिन्हें थांदला वन परिक्षेत्र कार्यालय में लाया गया है। बल्लू मंगला डामोर सहित दो जनों पर प्रकरण बनाया जा रहा है। इसमें पूर्व चौकीदार भी शामिल है।

काली स्कॉर्पियो लेकर वितरण कर रहे थे राशन, थाने से पूछताछ कर छोड़ा

माही की गूंज, रायपुरिया। मंगलवार को नगर में तीन संदिग्ध लोगों को ग्रामीणों की शिकायत पर थाने पर लाया गया। ये लोग रायपुरिया को उनके समाज के लोगों को राशन का वितरण करने आए थे। जिन्होंने पुलिस को बताया कि वह झाबुआ एसडीएम से मौखिक परमिशन होने की बात कह रहे है। हालांकि इनके पास कोई लिखित अनुमति इस तरह के राशन बांटने की नहीं है। सवाल यह उठ रहे है कि बिना अनुमति से इस तरह आकर बिना स्थानीय प्रशासन को जानकारी दिए राशन का वितरण करने को लेकर कई लोग गलत ठहरा रहे हैं। तीनों लोग वाहन सहित थाने पर लाया गया और पूछताछ की गई। जिसमें कोई संदिग्ध मामला सामने नहीं आया। फिलहाल देश के माहौल को देख बिना लिखित अनुमति और स्थानीय प्रशासन की बिना जानकारी के इस प्रकार से राशन वितरण करने के लिए आए लोगों को देख कर भय की स्तिथि निर्मित हो गई थी।

शत्रुंजय तीर्थ की वंदना की गई

माही की गूंज, झाबुआ। बुधवार को चौत्र शुद्धि पूर्णिमा के अवसर पर देवझिरी तीर्थ पर शत्रुंजय तीर्थ्र की वंदना की गई। जिसमें परमात्मा का अभिषेक केसर पुजन, चेती वंदर देववंदन एवं पटवंदना की विधि संपन्न की गई। एवं प्रभुं से प्रार्थना की गई की विश्वव्यापी कोरोना महामारी से विश्व को जल्द ही मुक्त करावे एवं कामना की गई। इस अवसर पर सभी ट्रस्टीगण उपस्थित थे साथ ही सोशल डिस्टेसिंग का पालन किया गया।

लॉक डाउन के दौरान दी हिदायत तो चौकी प्रभारी के विरूद्ध की झूठी शिकायत

झूठी वाहवाही लूटने वाला मेडिकल संचालक अपनी गैर जिम्मेदाराना हरकतों से कई बार मुंह की खाने के बाद भी नहीं आता बाज

माही की गूंज, खवासा।

झाबुआ जिला दो राज्यों गुजरात व राजस्थान की सीमा से जुड़ा है, तो वहीं जिले से अन्य राज्य में पलायन पर गए सवा लाख से अधिक मजदूर, लॉकडाउन के बाद जिले में वापस आए। साथ ही कुछ शासकीय व अशासकीय कर्मचारी, कई विद्यार्थी भी जो प्रदेश के कुछ महानगरों व अन्य राज्यों से आए हैं। जिला प्रशासन ने पूरे एहतियाद के साथ 1 अप्रैल से पूर्णतः लॉकडाउन का निर्देश देकर कोरोना संक्रमण से बचाने का एक अनुपम प्रयास किया। स्वास्थ्य विभाग की टीम के साथ जिले की पुलिस की तारीफहम आज जितनी करें उतनी कम है, जो दिन-रात अपनी ड्यूटी कर लॉकडाउन का महत्व लोगों को समझा रहे है। साथ ही इस लाइलाज बीमारी को गंभीरता से नहीं लेकर लापरवाही कर लॉकडाउन का उल्लंघन करने वालों को बिना किसी भेदभाव के सख्ती के साथ लॉक डाउन का पालन करवाने हेतु अपने अथक प्रयास कर पुलिस अपनी ड्यूटी पूरी ईमानदारी के साथ निभा रही है।

विकट स्थिति में पुलिस का मनोबल बढ़ाने वाले युवक को नमन

थांदला विधानसभा के खवासा, थांदला, परवलिया, काकनवानी चौकी व थाना क्षेत्र के रहवासी कुशलगढ़ में कोरोना से मिले 7 पॉजिटिव केस के बाद काफी डरे से हैं, तो पुलिस ने भी पूरी मुस्तैद होकर लॉकडाउन का पालन करवाने हेतु कमर कस ली है। जिससे जिले में कोई भी व्यक्ति इस संक्रमण का शिकार न बन सके। बता दें कि थांदला में भाजपा समर्पित होकर जनप्रतिनिधि भी है। किसी कारण व काम से लॉकडाउन के नियमों के विरुद्ध घर से बाहर निकले और पुलिस ने लॉकडाउन का पालन करवाने हेतु उक्त युवा व्यक्ति उर्फजनप्रतिनिधि को पुलिस की ड्यूटी का सामना करना पड़ा और पुलिस ने अपनी ड्यूटी निभाने के साथ दो लट्ठ भी मार दिए। उक्त बात से सिर्फवह जनप्रतिनिधि व पुलिस ही अवगत थी, परंतु उक्त युवा साथी ने अपनी समझदारी का परिचय देकर सोशल मीडिया पर एक एसएमएस शेयर किया कि, आज मैं बाजार गया था। जहां पुलिस ने लॉकडाउन का पालन करवाने हेतु मुझे भी लट्ठ से मारा, जिससे साफहै कि पुलिस अपना कार्य निष्पक्ष व ईमानदारी से कर रही है, इसके साथ तारीफकर पुलिस का मनोबल बढ़ाया। ऐसे विकट समय में अपनी प्रतिष्ठा से बढ़कर जनहित के साथ पुलिस का मनोबल बढ़ाया उसके लिए गूंज टीम ऐसे विचारों के व्यक्ति को नमन करती है।

बचकानी हरकत से एक वर्ग को किया था आक्रोशित, पिता ने भुगता हरजाना

लेकिन दूसरी ओर इस विकट स्थिति में हमारी सुरक्षा का जिम्मा निभा रही पुलिस पर अपना राजनीतिक प्रभाव बताकर एक झूठी शिकायत का कृत्य खवासा के एक मेडिकल संचालक ने किया, जो निंदनीय है। राजस्व पटवारी जिसे ग्राम में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में देखा जाता है, जिसका पुत्र खवासा में बजरंग बली मंदिर के पास किराए की दुकान में मेडिकल स्टोर का संचालन करता है। वह अपनी बचकानी हरकतों से खवासा में पहचाना जाता है। जिसने, जब खवासा के तलाई मोहल्ले के एक घर में केरोसिन का भंडारण कर जिसका डीजल बनाया जाता था। धनतेरस के दिन ही किसी लापरवाही के कारण केरोसिन में आग लग गई और एक के बाद एक 7 विस्फोट केरोसिन के ड्रम फूटने से हुए। आग ने इतना विकराल रूप ले लिया था कि ग्राम में एक बड़ी अनहोनी हो सकती थी, लेकिन मोहल्ले व ग्रामवासियों की सूझबूझ से आग पर काबू पा लिया। आग बुझाने में कुछ व्यक्ति आग की लपटों में झुलस भी गए। जिसमें उपचार के दौरान एक व्यक्ति की मौत भी कुछ समय के बाद हो गई थी। उस समय उक्त मेडिकल संचालक ने ऐसी कोई बचकानी हरकत की जिससे खवासा का एक वर्ग आक्रोशित हो गया और उक्त मेडिकल एवं संचालक के घर पहुंचे, जहां से वह तो रफू चक्कर हो गया परंतु उसके पिता को आक्रोशित भीड़ का सामना करना पड़ा था।

हमें सुरक्षित रखने के लिए लॉकडाउन का पालन करवाने हेतु पुलिस कर रही ड्यूटी।

पंचायतकर्मी कालू ने बताई गूंज को हकीकत।

अपनी झूठी शान के लिए 5 दिन बाद पंचायतकर्मी का वीडियो बनाकर की शिकायत

उक्त मेडिकल संचालक उर्फबचकानी हरकत करने वाले व्यक्ति ने सिर्फअपनी झूठी वाहवाही लूटने का शौक बना लिया है और हर समय कई विकट स्थिति में भी अपनी बचकानी हरकत करने में कोई कसर नहीं छोड़ता है। कोविड-19 के तहत लॉकडाउन के दौरान स्वास्थ्य सेवाएं और मेडिकल पर दवाइयों की सुविधा अनिवार्य रूप से पूरे एहतियात के साथ देना है। उक्त मेडिकल संचालक अपनी दुकान से अनाउंसमेंट करता है, तो वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी को भावी प्रधानमंत्री कहने वाला मेडिकल संचालक अपनी दुकान व दुकान के आगे लॉक डाउन के दौरान कई लोगों को बुलाकर बतियाते रहता है। साथ ही सोशल डिस्टेंसिंग की भी धज्जियां उडाता रहता था। जिसकी पुलिस चौकी पर शिकायतें गई। पुलिस नें अपनी ड्यूटी निभाते हुए भीड़ को भगाया। साथ ही मेडिकल संचालक को सख्त हिदायत दी कि किसी भी स्थिति में आगे से ऐसी भीड़ इकट्ठा न करें। पर यह बात मेडिकल संचालक को रास नहीं आई और अपने आप को भाजपा का बहुत बड़ा नेता मानकर खुद को प्रभावी बताते हुए पुलिस चौकी प्रभारी वीरेंद्रसिंह चौहान के विरुद्ध झूठी शिकायत का षड्यंत्र रचकर, पंचायतकर्मी कालू का एक वीडियो अपने कहे अनुसार बनाकर एसपी को फॉरवर्ड किया। साथ ही सांसद गुमानसिंह डामोर से भी बात कर एसपी पर दबाव पुलिस के विरुद्ध बनवाने का प्रयास किया।

उक्त शिकायत की निंदा खवासा में होने लगी तो, गूंज ने पंचायतकर्मी कालू से बात कि, तो बताया यह सही है कि पुलिस के किसी एक जवान ने मुझे मुंह पर मास्क बंधे होने के कारण नहीं पहचाना व मुझे एक लकड़ी मारी थी। जब मैंने पंचायतकर्मी होना बताया और मैं नल में पानी सप्लाई करता हूं कहा, तो पुलिस ने मुझे पंचायत का पास बनाने की समझाइश दी। जिसके बाद पास बना लिया। अब पुलिस से पास के बाद कोई परेशानी नहीं है। पांच दिन बाद जीतू सेन ने मेरे से पूछा क्या तुझे पुलिस वाले ने मारा था? तो मैंने कहा हां, मुझे नहीं पहचाना था, इसलिए मारा था। कालू ने बताया कि जीतू सेन ने कहा कि चौकी के एक बड़े साहब ने मुझे मारा है और मैं पंचायतकर्मी हूं बोलना, तो मैंने यह बात कहीं और मेरा वीडियो बनाया। मुझे पता चला है कि, जीतू को पुलिस वालों ने कुछ कहा है, इसलिए मेरा उपयोग किया है। बड़े साहब कौन है, यह मुझे नहीं मालूम था। एसपी साहब को भी मैंने फोन पर बताया कि, चौहान साहब ने मुझे नहीं मारा, कोई जवान था। जिसने मुझे नहीं पहचाना और मुझे एक लट्ठ लॉक डाउन का पालन करवाने हेतु मारा था।

गांव में की जा रही निंदा

चौकी प्रभारी चौहान ने बताया कि, मेडिकल के आगे लोगों की भीड़ कर जीतू बतियाता रहता है। जिसके कारण हमने उसे हिदायत दी थी। जिस पर इसने हमारे विरुद्ध झूठी शिकायत की है। हम तो हमारे पूरे स्टाफके साथ नगर एवं क्षेत्र को कोरोना-19 से सुरक्षित रखने हेतु दिन-रात ड्यूटी कर रहे हैं। जिसमें आम जनता का भी हमें सहयोग मिल रहा है। नगर के कुछ व्यक्तियों से चर्चा हुई तो बताते हैं पुलिस ने लॉकडाउन का पालन करवाने हेतु जिन प्रतिष्ठित व्यक्तियो को बिना काम से बाजार में आने पर हिदायत दी। उनका शिकायती सेनापति बन फोन कर सभी को पूछा, तुमको चौहान साहब ने अपशब्द बोले थे न, मैं सब के नाम से शिकायत कर रहा हूं! तो सभी ने थांदला के उस युवक की बात को आत्मसात कर कहा पुलिस ने इस समय हमारी गलतियों पर हमारी ही सुरक्षा के लिए हमें हिदायत दी है। जिसमें पुलिस की नहीं हमारी गलती है। खिसियानी बिल्ली अब अपनी झूठी आन को बचाने के लिए लोगों के सामने कह रहा है कि, शिवराज की हमारी भाजपा सरकार आ गई है, सांसद से कहकर कोरोना वायरस के थम जाने के बाद चौहान साहब का ट्रांसफर करवा दूंगा। जिस समय पुलिस का मनोबल बढ़ाने की आवश्यकता है। उस समय मेडिकल संचालक की उक्त घटिया हरकत की निंदा ग्राम में हर किसी के द्वारा की जा रही है। इस संबंध में मेडिकल संचालक जितेन्द्र सेन का कहना है कि पुलिस वालों ने मुझे भद्दी-भद्दी गालियां दी थी लेकिन मैने मेरी कोई शिकायत किसी को नहीं की।

कियोस्क सेंटर पर बढ़ी भीड़ तो संचालक बंद कर भागा

कियोस्क संचालक व बैंक पंचायत स्तर पर समन्वय बनाकर पैसा देगी तो नहीं होगा संक्रमण का डर

माही की गूंज, खवासा/भामल।

सरकारें लॉकडाउन के दौरान गरीब परिवार एवं किसानों को दिनचर्या की आर्थिक जरूरत को पूरा करने की मंशा के साथ बैंक खातों में हितग्राहियों को अलग-अलग मद से आर्थिक सहयोग के रूप में 500, उज्ज्वला योजना में 3 महीने की गैस सिलेंडर हेतु राशि व किसान सम्मान निधि के दो-दो हजार रुपए बैंक खातों में डाले जा रहे है। वर्तमान में आर्थिक स्थिति के चलते बैंक से उक्त राशि निकालना भी आवश्यक बन गया है। लॉकडाउन के साथ ही कियोस्क संचालकों ने कियोस्क बंद कर दिए थे। उक्त छोटी-छोटी राशि का लेन-देन बैंकों द्वारा नहीं कर कियोस्क द्वारा ही अधिकांश रूप से किया जा रहा है। यह भी सही है कि वर्तमान में अगर उक्त राशि निकालने हेतु सभी हितग्राही बैंकों में आ जाए तो बैंकों में बड़ी भीड़ हो सकती है। जिसके लिए बैंकों ने अपने सभी कियोस्क संचालकों को अपने कियोस्क सेंटर खोल पूरी एहतियाद के साथ राशि देने की बात कही है। तो वहीं कियोस्क सेंटर को खोलने के लिए परमिशन भी प्रशासनिक रूप से दी गई।

खवासा एसबीआई बैंक के अंतर्गत 8 कियोस्क तलावड़ा, रन्नी, परवाड़ा, खवासा, नारेला, नाहरपुरा तो मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक के मकोडिया, तलावडा व सेमलिया कुल 8 पंचायतों के नाम से 11 कियोस्क सेंटर है। लेकिन एसबीआई का परवाड़ा का कियोस्क संचालक भामल, खवासा के कियोस्क संचालक के साथ रन्नी, तलावड़ा, नारेला के संचालक ने खवासा में, नाहरपुरा के संचालक ने बामनिाया में इसी तरह मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक के मकोडिया व सेमलिया के सेंटर खवासा में तो तलावड़ा का सेंटर बामनिया में खोल रखे हैं।

गूंज की पहल लाएगी रंग

सामान्य स्थिति में क्षेत्र की 20 पंचायतों के 50 ग्रामों के लोग खवासा में आते हैं और वे खवासा, भामल व बामनिया में हो रहे संचालित कियोस्क सेंटर से राशि का लेन-देन कर लेते हैं। लेकिन लॉकडाउन के दौरान अगर खवासा, भामल में ही उक्त कियोस्क खोलकर संचालन करते हैं तो तय है इसमें सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं होगा और बड़ी भीड़ एकत्रित होकर संक्रमंण का डर बना रहेगा। इसलिए इन सभी 11 ही कियोस्क संचालकों को बैंक अधिकारियों के सहयोग के साथ पंचायत एवं ग्राम स्तर पर पूर्व से सूचना तथा अनाउंसमेंट कर संबंधित दिन व समय बता कर वहीं पर जाकर राशि का लेन-देन सोशल डिस्टेंसिंग व पूरी एहतियात के साथ यह कार्य बड़े ही अच्छे तरीके से हो सकता है और लोगों की राशि भी आहरण बिना किसी परेशानी के हो सकती है।

खवासा में एसबीआई के कियोस्क खोलें व सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान भी रखा फिर भी भीड़ होती रही। तो वही बुधवार को परवाड़ा के संचालक ने भामल स्थित अपने सेंटर को खोला तो बड़ी संख्या में इतनी भीड़ हो गई कि कियोस्क संचालक पूरे दिन भी पैसा वितरित करें तो भी वह नहीं कर सकता और परेशान होकर सेंटर ही बंद करके चला गया।

इस संबंध में एसबीआई के एक कियोस्क संचालक ललित बाथम से चर्चा की तो गूंज का यह सुझाव उसे बहुत अच्छा लगा और संचालक ने तत्काल रन्नी ग्राम पंचायत सचिव को पूरी बात कही जिस पर सचिव ने गुरूवार से ग्राम पंचायत पर राशि आहरण करने हेतु पूरी सुविधा देकर उतने ही व्यक्तियों को मोहल्ले वाईस सूचना देंगे जितने लोगों को हम 1 दिन में पैसा आहरण कर दे सकेंगे। गूंज की इस पहल के सम्बंध में म.प्र. ग्रामीण बैंक शाखा खवासा के मैनेजर पंकज संचार से बात कि तो गूंज कि यह पहल उन्हे बहुत ही अच्छी लगी और तीनो कियोस्क संचालको को अपने सेन्टर के साथ ही क्षेत्र के सभी पंचायतो में जाकर हितग्राहियो कि राशि आहरण करवाएगे जिसमें बैंक का भी पुरा सहयोग रहेगा। अगर कही पंचायत पर हमे सहयोग नही किया जाएगा तो? गूंज ने आश्वस्त किया की पंचायत व ग्राव स्तर तक जाकर लॉकडाउन के दौरान जो भी परेशानी आएगी उसमे पंचायत से लेकर प्रशासनिक स्तर पर बात कर समस्या का समाधान करवाएगे। जिसपर मैनेजर ने तत्काल अमल में लेकर संचालको को उक्त सुविधा हेतु सुचित करने कि बात कही। एसबीआई शाखा खवासा के मैनेजर पिएन भुरिया से बात कि तो उनको भी गूंज कि यह पहल बहुत ही अच्छी लगी और सभी पंचायतो में बात कर पेटलावद से कल ही अनाउसमेंट हेतु रिकाडिग बनवाकर मंगवाता हू और हमारे सभी कियोस्क संचालको को पंचायत वाईस अपने सेटर के साथ सभी पंचायतो में अलग-अलग दिन निर्धारित कर वहा के लोगो को पंचयत स्तर पर सुचना व बैंक कि और से अनाउसमेंट करवाकर कियोस्क संचालको व हितग्राहियो कोपुरा सहयोग राशि आहरण मे इस लॉकडाउन कि विकट स्थिती में करने कि बात कही और गूंज को धन्यवाद देकर कहाँ इस कार्य में कही भी दिक्कत आई तो हम आपको सूचित क रवह भी समाधान करवाएगे।

गूंज की अपील

गूंज कि यह पहल खवासा बैंक एवं कियोस्क संचालक के साथ जिले कि सभी बैंके एवं उनके कियोस्क संचालक देश कि सुरक्षा एवं सेवाभावना के साथ करेगे तो तय है जिले में यह एक नया संदेश जाकर आम लोगो को सुविधा सुचारू रूप से इस विकट स्थिती में मिल सकेगी इसलिए गूंज परिवार सभी बैक व उनके कियोस्क संचालको से अपील करता है कि इस विकट स्थिती में सभी इस समय ग्राम पंचायत एवं गावं स्तर तक जाकर हितग्राहीयो को राशि का लेन-देन करें।

हनुमान जयंती पर लॉकडाउन का साया

माही की गूंज, खवासा।

जब संकट बड़ा हो, विकराल हो, तो जरूरी नहीं कि, संकट से पार पाने के साधन भी बड़े ही हो। छोटे-छोटे उपाय और छोटी-छोटी सावधानियों से भी बड़े संकट से पार पाया जा सकता है। जिस प्रकार हनुमानजी ने राक्षसी सूरसा के विकराल रूप के आगे बहुत ही सूक्ष्म रूप धारण करके उसके मुंह में प्रविष्ट होकर उस राक्षसी से मुक्ति पा ली थी।

संकट कटे मिटे सब पीरा।
जो सुमिरे हनुमत बलबीरा।।

वर्तमान में कोरोना रूपी राक्षस से जंग हम सामाजिक दूरी जैसे छोटे-छोटे उपाय से ही जीत पाएंगे।

चौत्र नवरात्र, महावीर जयंती, रामनवमी के साथ ही इस सप्ताह भी धार्मिक पर्व है। बुधवार को हनुमान जयंती के साथ ही मुस्लिम समाज में शब-ए-बारात का आयोजन होना है। वहीं शुक्रवार को ईसाई समाज का गुड फ्राइडे व रविवार को ईस्टर का पर्व मनाया जाएगा। लॉकडाउन के बीच इन पर्वो को घर पर ही रह कर आराधना, इबादत और प्रार्थना करने की अपील विभिन्न धर्मगुरुओं ने की है।

भक्ति की परंपरा भी ना टूटे और सामाजिक दूरी का भी पालन हो, इसी प्रकार की अपील की गई है। हनुमान जयंती के अवसर पर विभिन्न मंदिरों में भंडारे का आयोजन होता आ रहा है, लेकिन इस वर्ष लॉकडाउन के चलते किसी भी मंदिर पर कोई भी आयोजन नही रखा गया।

गांव के बस स्टैंड स्थित प्राचीनतम हनुमान मंदिर पर इस वर्ष कोई आयोजन नहीं किया गया, केवल ध्वजा चढ़ाकर व आरती के साथ हनुमान जयंती मनाई गई। यहां तक की यज्ञ अनुष्ठान भी नहीं किए गए। श्रद्धालुओं ने घर पर ही रहकर पवन पुत्र की पूजा-अर्चना और आराधना की।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422